वशीकरण की सच्ची सिद्धि

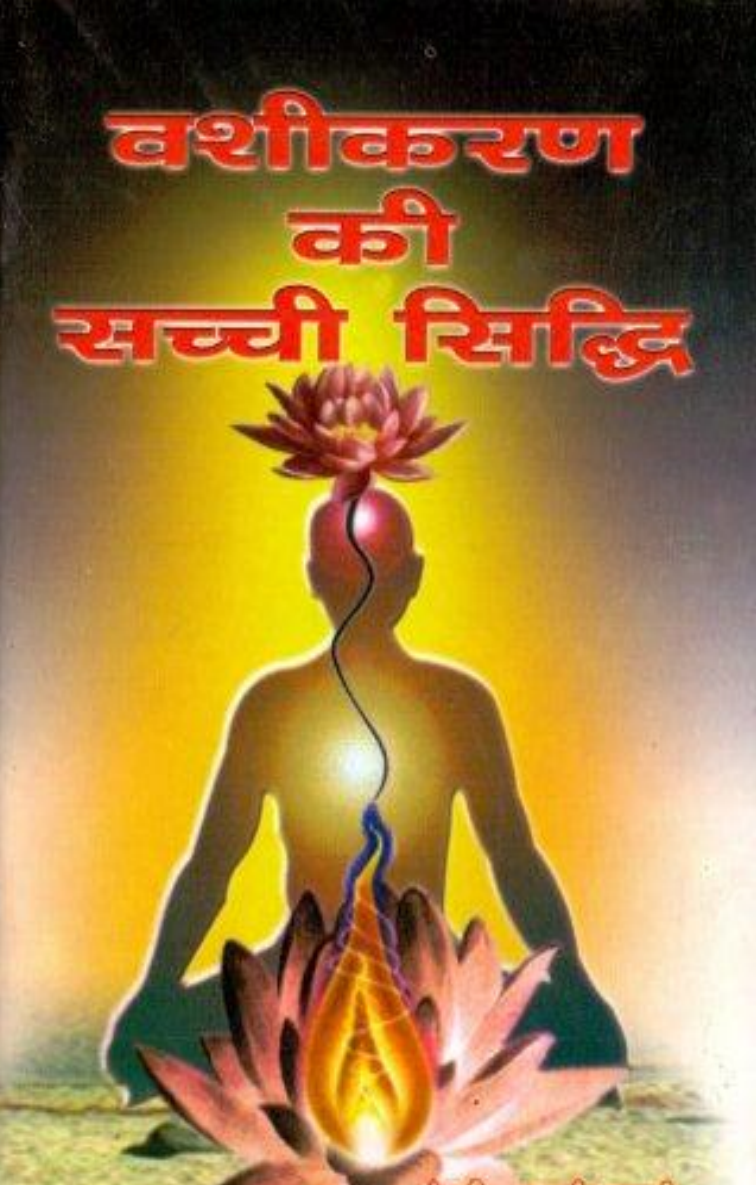

ॐ

वशीकरण की सच्ची सिद्धि

लेखक :
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

२०१०

मूल्य : ८.०० रुपये

मनुष्य जाति बहुत समय से एक ऐसी सिद्धि की कल्पना करती चली आ रही है, जिससे वह दूसरों को वश में कर सके। इस दिशा में अब तक बहुत प्रयत्न हुए हैं और अनेक किंवदंतियाँ एवं कथाएँ प्रचलित हुई हैं। कहीं-कहीं इन जनश्रुतियों में इतनी अत्युक्ति होती है कि एक जिज्ञासु के लिए यह निर्णय करना कठिन हो जाता है कि इसमें कितना सत्य है और कितना असत्य

सर्वसाधारण के लिए मंत्र द्वारा किसी को मोहित कर लेने का कोई नियम ईश्वरीय सृष्टि में नहीं है क्योंकि परमात्मा हर मनुष्य की स्वाधीनता को अक्षुण्ण रखना चाहता है। बलात्कार पूर्वक किसी का धन, धर्म और बुद्धि हरण करना पाप है और दंडनीय है। पहले तो ऐसी सिद्धि को प्राप्त करना कठिन है, यदि कोई दुरुपयोग करने के लिए प्राप्त कर ले, तो वह प्रयोक्ता के नाश का ही हेतु प्रमाणित होगी।

एक सर्वसुलभ और सच्चा वशीकरण भी है, जिसे प्रेम के नाम से पुकारते हैं। प्रेम एक तप है। यह तप जिस प्राणी के पक्ष में किया जाता है, उसके प्रसन्न होने और वश में आने में कुछ संदेह नहीं।

जो वशीकरण की सिद्धि को यों ही झटके के माल की तरह प्राप्त करने की फिकर में हों, उन्हें इस पुस्तक से कुछ भी सहायता न मिलेगी, किंतु जो तप करके वरदान प्राप्त करने के अनादि सिद्धांत पर विश्वास करते हैं, वे इस पुस्तक के आधार पर मनोवांछा पूरी कर सकेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

—श्रीराम शर्मा आचार्य

वशीकरण की सच्ची सिद्धि

हमारे पास अनेक ऐसे पत्र आते रहते हैं, जिनमें लेखकों की इच्छा वशीकरण विद्या सीखने की होती है। अखवारों में जंत्र, मंत्र, ताबीज, अंगूठी आदि के ऐसे विज्ञापन छपते रहते हैं, जिनमें यह बताया जाता है कि इनका प्रयोग करने से हर कोई स्त्री-पुरुष वश में हो सकता है। इसके अतिरिक्त ऐसी भी अनेक कथा और किंवदंतियाँ प्रचलित हैं, जिनमें एक मंत्र विशेष द्वारा किसी व्यक्ति का बहुत व्यक्तियों को मोहित कर लेने का कथानक होता है। आल्हा, ढोला के ग्रामीण गीतों में ऐसे किस्से खूब भरे होते हैं, जिनमें किसी जादूगर द्वारा वशीकरण मंत्र से साधारण लोगों को वश में किया गया हो। पुराणों में भी ऐसी कथा खूब मिलती हैं। इन जनश्रुतियों से प्रभावित होकर साधारण जनता ऐसा विश्वास कर लेती है कि कोई ऐसा गुप्त मंत्र होगा, जिसकी सहायता से दूसरों को वश में किया जा सकता है। हम इस विद्या को क्यों सीखना चाहते हैं ? इन प्रश्न का उत्तर देने में कोई शब्दाडंबर भले ही रचे, पर सीखने वाले की हार्दिक इच्छा दो पाई जाती हैं—(१) अपने से भिन्न योनि के मनुष्य को वश में करके उससे कामतृप्ति की जाए, (२) बुद्धि को भ्रमित करके उसका पैसा झटक लिया जाए। वशीकरण सीखने के लिए हजारों महानुभाव हमें पत्र भेजा करते हैं, परंतु उनमें अब तक एक भी हमें ऐसा न मिला, जो कामिनी-कांचन प्राप्त करने के स्वार्थ को छोड़कर अन्य किसी कारण से वशीकरण विद्या को सीखना चाहते हों।

एक बार एक महानुभाव हमारे यहाँ जिला बारीसाल (बंगाल) से पधारे, उन्होंने अपना अभिप्राय प्रकट किया कि वे वशीकरण सीखना चाहते हैं। उसके लिए वे बंगाल के विभिन्न जिलों में,

आसाम प्रांत में तथा अन्यान्य बहुत-से स्थानों पर ऐसे सिद्ध योगियों की तलाश में घूम चुके थे, किंतु उन्हें कोई ऐसा गुरु नहीं मिला था। उनसे किसी ने अखंड ज्योति के बारे में जरा बढ़ाकर बातें कह दी थीं, इसलिए यहाँ चले आए और इच्छा करते थे कि ऐसा मंत्र सिद्ध करा दिया जाए, जिससे पलक मारते ही स्त्री-पुरुष जिसे वे चाहें अपने वश में कर लें।

उनका अभिप्राय सुनने के बाद हमने उनसे कहा—"महोदय ! वशीकरण के तो कितने ही प्रकार हैं। उनमें से किस प्रकार का और कितनी सिद्धि का वशीकरण आप चाहते हैं ? वह सब भी प्रकट कर दीजिए।" उन्होंने बताया कि वे भिन्न बातें चाहते हैं, "(१) जिस पर वे प्रयोग करें, वह अपनी निज की बुद्धि खो दे और उनकी आज्ञा का पालन करे। जैसा वे आदेश करें, उसका अविलंब आचरण करे, उचित और अनुचित के बारे में कुछ विरोध न हो। (२) उसका मन और शरीर पूरी तरह हमारे काबू में रहे। जैसा रखना चाहें, वैसा रख सकें। (३) जरूरत पड़ने पर शरीर का ढाँचा बदल सकें।" वे चाहते थे कि जिस स्त्री को चाहें वह बिना धर्म, लज्जा, अवसर का ध्यान रखे उनके साथ पत्नी भाव का आचरण करने के लिए तैयार हो जाए। कोई अदालत, अफसर, मैनेजर, सेठ उनका इशारा पाते ही मनोवांछा पूरी कर दे। किसी को रोगी, स्थिर पागल, मूर्च्छित बना सकें। जिसे चाहें उसे भेड़, बकरा, सुआ, कबूतर, मक्खी, बिल्ली आदि बनाकर रखें और फिर जब चाहे, तब आदमी बना लें। इतने बड़े काम वे इसलिए करना चाहते थे कि मनमाने सुख भोग सकें और धन-प्रतिष्ठा प्राप्त करें।

वारीसाल निवासी वे महानुभाव यह विश्वास किए हुए थे कि बंगाल और आसाम में यह विद्या खूब प्रचलित थी और वहाँ की स्त्रियाँ तक इसमें निपुण थीं और कहीं-कहीं अब भी हैं। उनने दर्जनों ऐसे किस्से सुनाए, जिनमें उनके विश्वास को पुष्ट करने वाली घटनाओं का वर्णन था। यह सज्जन भोले और जिज्ञासु थे।

पंद्रह दिन मथुरा ठहरे, बहुत गम्भीर विचार-विनिमय के पश्चात् उन्हें यह विश्वास कराया गया कि साधारण लोगों को ऐसी सिद्धि का प्राप्त होना असंभव है और वे कथाएँ किंवदंतियाँ मात्र हैं। यह हो सकता है कि उच्च आध्यात्मिक भूमिका में जाग्रत् हुए कोई सिद्ध पुरुष ऐसी योग्यता रखते हों, पर वे भी साधारण सांसारिक कार्यों के लिए या अनुचित इच्छाओं की तृप्ति के लिए उनका प्रयोग कदापि नहीं करते। विषय-विकारों में, राग-द्वेषों में जब तक मन लगा हुआ है, तब तक ऐसी सिद्धियाँ नहीं मिल सकतीं। मिल भी जाएँ, तो उसके प्रयोक्ता को कुछ ही समय के बाद जड़-मूल से नष्ट करती हुई विलुप्त हो जाती हैं। ईश्वर ने अपनी सृष्टि का क्रम बड़े सुंदर ढंग से बनाया है और हर प्राणी को अपना स्वतंत्र अधिकार प्रदान किया है। कर्म करने में मनुष्य को स्वतंत्रता देकर उसे अपना भविष्य निर्माण करने का अधिकार दिया है। अपनी निज की ज्ञात या अविज्ञात इच्छाओं के अतिरिक्त और किसी के बंधन में कोई मनुष्य नहीं हो सकता। हमारे लिए अपनी ज्ञात या अज्ञात इच्छाएँ ही बंधन हो सकती हैं, अन्य किसी में भी इतनी सामर्थ्य नहीं है, जो मनुष्य की प्रबुद्ध आत्मा को बाँध सके, उसे अपने वश में रख सके। गर्मी, हवा और आकाश को कैद करना कठिन है। जो महापुरुष किसी की मानसिक योग्यता को बाँध सकते हैं, उनकी स्थिति बहुत ऊँची होती है, वे अपनी दिव्यशक्ति का साधारण सांसारिक झगड़ों में प्रयोग नहीं करते। आपके छोटे-छोटे बच्चों में लड़ाई होने लगे, तो उनके लिए फटकार या एक तमाचा ही काफी है। भला कौन पिता अपने अल्प ज्ञानी बालकों का झगड़ा मिटाने के लिए दुनाली बंदूक का प्रयोग करेगा ? इंद्रियासक्त मनुष्य बच्चे हैं और वासनाओं का बखेड़ा बालू के किले बनाना है। महापुरुष इन्हें मनोरंजन की दृष्टि से देखते हैं, यदि बच्चे बालू के किले में सोने का फाटक चढ़ाना चाहें, तो पिता अपनी तिजोरी से सोने की तख्तियाँ निकालकर उन्हें नहीं दे देता।

इसी प्रकार जिन सिद्ध महापुरुषों को कठोर तपस्या के उपरांत कोई योग्यता प्राप्त हो जाती है, वे भूलकर भी उसका दुरुपयोग नहीं होने देते। विषयी पुरुषों को तो ऐसी सिद्धियों का प्राप्त होना सर्वथा असंभव ही है।

बहुत विचार-विनिमय के पश्चात् उन्होंने यह विश्वास कर लिया कि इस प्रकार का वशीकरण जैसा कि वे चाहते हैं, तब तक प्राप्त नहीं हो सकता जब तक कि आत्मा राग-द्वेषों और विषयों से ऊँची न उठ जाए और जब आत्मा ऊँची उठ जाती है, तब उन्हें इस प्रकार के साधन व्यर्थ और हानिकारक प्रतीत होने लगते हैं। फिर भी उन्होंने पूछा कि, क्या कोई ऐसा उपाय नहीं हो सकता कि दूसरों को अपना आज्ञानुवर्ती बनाया जा सके। हमने कहा—क्यों नहीं ? ऐसे उपायों से आध्यात्मिक तत्त्व ज्ञान कोना-कोना भरा पड़ा है। मनुष्य जड़ या अंतःकरण से रहित जीव नहीं है, जिस पर कि बाह्य अनुभूतियों का कोई प्रभाव ही न होता हो। पशु-पक्षी तक एक बंधन में बँध जाते हैं और वे एक-दूसरे के लिए प्राण तक दे देते हैं, फिर मनुष्य तो बहुत उच्च भावनाएँ रखने वाला प्राणी है, इसकी अनुभूतियाँ और मानसिक संवेदनाएँ तो बड़ी ही कोमल हैं। माता अपनी संतान के साथ, पत्नी के पति के साथ, मित्र-मित्र के साथ इतने गहरे बंधनों में बँधे देखे जाते हैं, जितने कि तथाकथित वशीकरण मंत्र से भी नहीं हो सकते। मंत्र मोहित व्यक्ति बुद्धिहीन होकर अपनी क्रियाएँ आपके चित्त के अनुसार कर सकता है, पर उसकी स्वेच्छा तो सोयी हुई है, उसे आपके कार्यों में कोई आंतरिक सहयोग न होगा। मंत्र मोहित कोई स्त्री यदि अपना सतीत्व दे दे, तो भी उसका हृदय प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

किंतु एक ऐसा व्यावहारिक वशीकरण मौजूद है और लाखों-करोड़ों व्यक्तियों पर उसका नित्य सफल प्रयोग होता है, जो हृदय को भी वश में कर लेता है। यह मंत्र है—प्रेम और त्याग। यह मंत्र अकाट्य है। संसार में एक भी जीवित प्राणी ऐसा नहीं हो सकता

जिसे प्रेम और त्याग की शक्ति के सामने नत मस्तक न होना पड़े। रामचरितमानस में कहा गया है कि—

जाकर जापर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलत न कछु संदेहू।।

यदि सच्चा प्रेम हृदय में हो, तो किसी भी व्यक्ति को वश में कर लेना कुछ कठिन नहीं है। प्रेम और भलाई से पशु-पक्षी भी वश में हो सकते हैं। इस प्रकार वार्त्तालाप के सिलसिले में उन्हें नारदीय भक्तिसूत्र भी सविस्तार सुनाया गया। तब समझ गए कि जीवित वशीकरण भी मौजूद है और वह सत्य, सुंदर एवं सरल भी है। जब उनकी जिज्ञासा पूरी तरह शांत हो गई तो वे वापस लौट गए।

कितनी ही भोली बहनें भी इसी प्रकार के पत्र हमें लिखा करती हैं। वे पतियों के दुर्व्यवहार या रुखे स्वभाव के कारण खिन्न होती हैं और चाहती हैं कि कोई ऐसा मंत्र-जादू अनायास ही उन्हें मिल जाए, जिसे वे गुप्त रीति से अपने पति पर प्रयोग कर दें और वह उनके वश में हो जाए, प्रेम करे, आज्ञानुवर्ती बन जाए। गत वर्ष एक पत्र तो हमारे पास ऐसा आया, जिसमें एक बहन बड़ी घातक मूर्खता कर बैठी थी। उसने लिखा था कि एक कंजड़ जाति की स्त्री की शिक्षा मानकर मैंने रजोधर्म का रक्त गुप्त रूप से पति को इसलिए खिला दिया कि वे मेरे वश में हो जावे, इसका फल हुआ कि पति का सारा शरीर विषैले फोड़ों से भर गया और वे मृत्यु शय्या पर पहुँच गए। यह बहन कोई ऐसा उपाय हमसे पूछती थीं कि उसके पति नीरोग हो जाएँ, साथ ही वह यह भी चाहती थीं कि किसी को भी उसका नाम प्रकट न किया जाए, अन्यथा पतिगृह से उसे या तो निकाल दिया जाएगा या कुछ और दुर्गति की जाएगी। उस बहन के पति भी हमारे मित्र थे, उन्हें अपने स्वतंत्र व्यवहार से रोग मुक्त के उपाय बताए, जिनकी सहायता से तीन-चार महीने में वे नीरोग हो गए। कुछ ऐसी स्त्रियों के पत्र हमारे पास आए हैं जो वशीकरण के फेर में पड़कर अपना धन, धर्म गवाँ चुकी हैं और फिर भी उन्हें सफलता प्राप्त करने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ।

वशीकरण के संबंध में जनता की जो विचित्र धारणाएँ हैं उनके भ्रम-जंजाल में बड़ी कष्टकारक स्थिति का सामना करना पड़ता है, कई बार तो बेचारे निर्दोष व्यक्तियों की हत्याएँ कर दी गईं या आमानुषिक दंड इस संदेह में दिए गए कि इन्होंने हमारे ऊपर कुछ मंत्र-जंत्र कर दिया है। इस प्रकार के भ्रम-जंजालों का सदैव ही हम खंडन करते रहे हैं और इस पुस्तक में तो इस विषय का और भी स्पष्ट रूप से विवेचन कर रहे हैं, जिससे कि सर्वसाधारण को वास्तविकता का ठीक तरह ज्ञान हो जाए।

किसी को वश में करने का कार्य छू-मंत्र से नहीं हो सकता और यदि कर भी ले, तो बड़ा अधूरा, कष्टसाध्य एवं अंत में हानिकारक सिद्ध होगा। वशीकरण का सर्वसुलभ मंत्र हमारी आंतरिक भावनाओं के अंतर्गत रहता है। मनुष्य में दूसरे के भाव पहचानने की असाधारण योग्यता है। छोटा बालक जो लोकाचार और वाणी व्यापार को नहीं जानता, वह भी आंतरिक प्रेम और अप्रेम को बात की बात में ताड़ लेता है और उन्हीं की तरफ आकर्षित होता है, जिनमें तुलनात्मक दृष्टि से अधिक प्रेम पाता है। फिर बड़ी उम्र के समझदार व्यक्तियों की तो बात ही क्या है ? जब पशु-पक्षी भी हित-अनहित पहचान लेते हैं, तो मनुष्य क्यों नहीं पहचान लेगा। जिसका आंतरिक स्नेह जिस पर होता है, वह उसे पहचान ही लेता है और एक दिन अपनी भूल सुधारकर सच्चे मार्ग पर आ जाता है। सच्चे प्रेम की यह कसौटी है कि वह प्रेमी की अवनति नहीं उन्नति चाहता है। जो अपने प्रेमी का धन, धर्म, समय, यश या और कुछ नष्ट करने की चेष्टा करता है वह प्रेमी नहीं हो सकता। स्वार्थी मनुष्य अपने मतलब के लिए प्रिय के धन, धर्म की परवाह नहीं करता और न ही उसका भाव निःस्वार्थ रहता है, किंतु जो सच्चा प्रेमी है, वह अपने प्रेमी को सब प्रकार की उन्नति चाहता है और उसमें अपने को तनिक भी बाधक नहीं बनने देता। निःस्वार्थ और निष्कपट प्रेम में वह आकर्षण है, जो प्रेमी के हृदय

को बाँध लेता है। पवित्र प्रेम का बंधन ऐसा उच्च है कि वह नरक की यातनाओं में अब प्रेमी को सड़ाने के लिए नहीं रोकता, वरन् शांति और आनंद का रसास्वादन करते हुए उच्च कक्षा की ओर, मुक्ति की ओर बढ़ता जाता है। सात्त्विक प्रेम बंधन का नहीं, वरन् मुक्ति का सोपान है। इसके द्वारा एक मनुष्य दूसरे को सहायता देकर देवत्व के पुण्यपथ पर अग्रसर करता है। प्रेम ही वशीकरण है।

बलिदान की आवश्यकता

समझा जाता है कि वशीकरण एक तांत्रिक विद्या है। इसलिए इसके विधि-विधान भी तांत्रिक रीतियों के ही होने चाहिए। हम देखते हैं कि तांत्रिक लोग अपने इष्टदेव को प्रसन्न करने के लिए बलिदान की अनिवार्य आवश्यकता समझते हैं। भैरव, भवानी आदि के मठों पर अक्सर पशु-पक्षियों का भी बलिदान किया जाता था। सुधरे हुए दक्षिणमार्गी तांत्रिक भी नारियल आदि का बलिदान करते हैं। ठीक भी है, बिना दिए दूसरी चीज नहीं मिलती। जो लेना चाहता है, उसे देना अवश्य पड़ेगा। संसार के सभी तत्त्वों का निर्माण "पहले दो तब मिलेगा" के आधार पर हुआ है। बीज बोने पर खेत उगता है, प्रसव कष्ट सहकर माता संतान सुख उठाती है। कठिन परिश्रम के बाद पैसा मिलता है, पानी से भरे प्याले में दूध लेना चाहते हैं, तो पहले पानी को फैला देना आवश्यक है। मुफ्त में कुछ नहीं मिलता, यदि मिल भी जाए, तो ठहर नहीं सकता। आप किसी का हृदय जीतना चाहते हैं, इसके लिए कुछ बलिदान करना पड़ेगा, क्योंकि मुफ्त में कुछ नहीं मिल सकता। पुराणों में ऐसी असंख्य कथाएँ भरी पड़ी हैं, जिनसे प्रकट होता है कि बलिदान करने से देवता प्रसन्न होते हैं और वे मन चाहा फल देते हैं। रावण ने अपने सिरों का बलिदान शंकर को देकर इच्छित वरदान प्राप्त किए थे। भागीरथ के तप करके गंगा को प्रसन्न करने की कथा

प्रसिद्ध है। बलिदान तत्त्व पर अधिक गंभीरता से विचार करने पर उसमें उच्चकोटि के त्याग का आभास मिलता है। साधारण त्याग वह है, जिसमें अपनी फालतू चीज दूसरे को दे दी जाए। बलिदान वह है, जिसमें अपनी जरूरी प्रिय वस्तु भी स्वयं कष्ट सहकर दूसरे को दे दी जाए। यह ऊँचे दर्जे का त्याग हुआ। बलिदान का अर्थ ऊँचे दर्जे का त्याग ही समझना चाहिए।

आप जिसे प्रसन्न करना चाहते हैं, जिसे वश में करना चाहते हैं, उसके लिए कुछ बलिदान कीजिए, कष्ट सहिए, तपस्या कीजिए, अपनी प्रिय वस्तु को दीजिए। बनावट से नहीं, हृदय के अंतःस्थल से लालच देकर बहकाने के लिए नहीं, निःस्वार्थ भाव से। इस प्रकार आप अपने ध्येय के अधिक निकट पहुँच जावेंगे। प्रेम का मार्ग कठिन नहीं, वरन् सुगम है। प्रेमी को प्राप्त करना बहुत आसान है, बशर्ते कि अपने में त्याग, प्रेम और उदारता की भावनाएँ मौजूद हों। नीचे हम कुछ प्रेमियों के अनुभव उद्धृत करते हैं, यह लोग वशीकरण के पहुँचे हुए सिद्ध कहे जा सकते हैं।

संत कबीर कहते हैं—

पिया का मारग सुगम है, तेरा चलन अपेड़ा।
नाच न जाने बाबरी, कहे कि आँगन टेढ़ा।।

सच्चा प्रेमी अपने लिए कुछ नहीं चाहता। बदले में चाहे उसे प्रेम प्राप्त न हो, तो भी खिन्न नहीं होता। अपने प्रेम में किसी प्रकार का अंतर नहीं आने देता। वह 'हरिऔध' के शब्दों में कामना करता है कि—

'प्यारे जीव, जगत हित करें, गेह चाहे न आवें।

श्री मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं—

तुम यहाँ सुधि लो कि न लो कभी।
उचित उत्तर दो कि न दो कभी।।
पर यही कहे हम हैं अहो।
तुम सदैव सहर्ष, सुखी रहो।।

सच्चे प्रेमी की भावना होती है—

"मेरी प्रीति होय नंदनंदन सों आठों याम।
मोसों जनि प्रीति होय नंद के किशोर की।।"

तुलसीदास जी कहते हैं—

जलदि जनम भरि सुरति बिसारेउ।
याचत जल पवि पाहन डारेउ।।
चातक रटनि घटे घटि जाई।
बढ़े प्रेम सब भांति भलाई।।
कनकहि बान चढ़हि जिसि दाहे।
तिमि प्रियतम पद नेह निबाहे।।

सच्चा प्रेम स्वयं ही एक वरदान है। प्रेमी के मिलने में जो आनंद आता है, वह पूरा का पूरा प्रेम की भावना में मौजूद है। ज़ो शुद्ध हृदय से प्रेम करता है, उसको वियोग नाम की कोई वस्तु दुनिया में नहीं है। रामचरितमानस में कहा गया है—

जेहि कर जेहि पर सत्य सनेहू।
सो तेहि मिलै न कछु सन्देहू।।

चाहे ध्येय कितना ही कठिन हो, सच्ची लगन से वह प्राप्त हो ही जाता है। एक अँग्रेजी कवि कहता है—

"मैंने झरने के किनारे पर पत्थर का बारीक पिसा हुआ चूर्ण बालू की तरह दूर-दूर तक फैला हुआ देखा, इस बालू में से एक मुट्ठी उठाकर मैंने देखा तो जाना कि यह बढ़िया जाति के पत्थरों का चूरा है, जो बड़ा कठोर होता है और तीक्ष्ण औजारों के द्वारा भी बड़ी मुश्किल से काटा जाता है। मैं विचार करने लगा कि यहाँ न तो कोई बड़ा यंत्र है न कोई चतुर इंजीनियर, फिर वे शिलाखंड क्यों कर चूर-चूर हो गए ? और पर्वत शिखर से उतरकर इस साधारण भूमि में कैसे लौटने लगे ?"

"बहुत सोच-विचार कर मैंने जाना कि झरने की कोमल बूँदें उन चट्टानों पर लगातार गिरती रही हैं और उन्हें गलाकर अपने प्रवाह में बहा ले गई हैं। मैंने यह भी जाना कि यदि कोई मनुष्य पर्वत की तरह अहंकारी हो और चट्टान की तरह उसका दिल कठोर हो, तो भी वह आंतरिक प्रेम की सुकोमल बूँदों से गलकर ऐसी ही धूल बन सकता है, जैसे कि इस झरने के किनारे पर दूर-दूर तक फैली हुई दिखाई देती है।"

एक दूसरे तत्त्वज्ञ का उपदेश है, "संसार में कोई भी ऐसी वस्तु नहीं है, जिसे आप प्राप्त न करें। कोई भी सुंदर भविष्य इतनी दूर नहीं है कि आप न पा सकें। कोई भी ऐसी संपदा नहीं है, जिसे कोई व्यक्ति प्राप्त कर सका हो, पर आप न पा सकें। आप अपने साथियों के हृदयों में ज्ञान और प्रेम का संचार कीजिए, उनके लिए शुभ कामना कीजिए और भलाई चाहिए। उनके सुखों को अपना सुख मानिये, वे सब आपके चरणों पर लोटने लगेंगे, आपकी आज्ञा का पालन करने में गौरव अनुभव करेंगे।"

कवि हैरिंगटन कहते हैं—"पैनी तलवार फौलाद की ढालों को भी काट सकती है, क्योंकि वह अचूक है। मुझमें दस आदमियों की बराबर शक्ति हैं, क्योंकि मेरा हृदय पवित्र है।"

इमर्सन कहते हैं—"मनुष्य के हृदय की पवित्रता से बढ़कर कोई भी दूसरी वस्तु नहीं है। अपने आपको दुर्भावनाओं और स्वार्थपूर्ण विचारों से मुक्त कर लो, फिर समस्त संसार तुम्हारे साथ होगा।"

यह सभी अनुभव इस बात के साक्षी हैं कि वशीकरण की महान् साधना के लिए त्याग सबसे महत्त्वपूर्ण अंग है। दिए बिना कुछ नहीं मिल सकता। स्वयं कष्ट सहिए, तप कीजिए, अपने प्रेमी को अपनी सर्वोत्तम वस्तुएँ समर्पण कीजिए, तो वह आपका अपना हो सकता है। आपके वश में आ सकता है।

दंपत्ति वशीकरण

इंद्रिय वासना से प्रेरित होकर किसी को वश में करने का या उसके ऊपर अपनी इच्छा लादने का प्रयत्न मत कीजिए। खास तौर से यदि वैसा करना धर्म के विरुद्ध हो। पाश्चात्य देशों में जहाँ पति-पत्नी का चुनाव करने की आजादी है, वहाँ की बात दूसरी है। यहाँ हमारे देश में ऐसा रिवाज नहीं है। लड़की-लड़कों की अंधवासना को वैध रूप से विवाह कार्य में कोई स्थान नहीं दिया जाता। लड़की या लड़के के कुल, संस्कार, परिवार, स्वास्थ्य, समानता आदि पर ही यहाँ विशेष जोर दिया जाता है और निर्णय करने का अधिकार अनुभवी गृहपतियों को होता है। यहाँ भावी-पत्नी के लिए आकर्षित होने का प्रश्न ही नहीं उठता, वरन् उनके संरक्षकों को संतोषजनक स्थिति का विश्वास कराना होता है। इसलिए पति-पत्नी का चुनाव करने के लिए कथित वशीकरण की कुछ भी आवश्यकता नहीं है। वे गंधर्व विवाह, जिनमें स्त्री-पुरुष एक-दूसरे के साथ हो लेते हैं, उनमें एक-दूसरे को संतोष करा देने की बात होती है। जब एक-दूसरे को अपनी आवश्यकता को पूर्ण करने की योग्यता देखते हैं, तो आपस में बँध जाते हैं। वशीकरण की आवश्यकता वहाँ समझी जाती है, जहाँ एक पक्ष अरुचि रखता है या विरोधी होता है, किंतु दूसरा पक्ष सहयोग के लिए उत्सुक होता है, यह स्थिति अवांछनीय है। इंद्रिय वासना बहुत प्रबल है, वह प्रायः सभी प्राणियों को सताती है। यदि एक पक्ष अपनी वासना को रोककर उत्सुक पक्ष की बात अस्वीकार करता है, तो अवश्य ही उसमें कोई तथ्य होना चाहिए। धर्म-अधर्म का विचार ऐसे अवसरों पर प्रमुख होता है। स्त्री जाति में धर्म का विचार सतीत्व बहुत अधिक है, वह कष्ट सहकर भी पतिव्रत धर्म का पालन करती है। अनेक लुच्चे-गुंडे उनकी ओर पाप दृष्टि से देखते हैं, पर वे विचलित नहीं होतीं और उनकी अंतरात्मा फिसलते हुए पाँव को रोक लेती है। उपरोक्त दोनों प्रकार की देवियों को पतित करने का

प्रयत्न करना पहले दर्जे की असुरता है इस असुरता में कोई सात्त्विक-आध्यात्मिक शक्ति सहायक नहीं हो सकती। कुछ तामसी तंत्र इस कार्य में मदद कर सकते हैं, पर वह धर्म विरुद्ध होने के कारण प्रयोक्ता को बड़ी अधोगति में डालते हैं। ऐसी सिद्धियाँ कुछ क्षणिक चमत्कार दिखाकर लुप्त हो जाती हैं। बाजारों में जिस प्रकार के वशीकरण के गंडे-ताबीज बिकते हैं, उनमें ठगी के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। पहले तो ईश्वरीय इच्छा के विपरीत होने के कारण ऐसी सिद्धि किसी स्वार्थी मनुष्य को प्राप्त नहीं होती। यदि हो भी जाए, तो इतने बड़े परिमाण में नहीं कि हजारों ताबीज हर महीने बेचे जा सकें। यदि वह विज्ञापनबाजी सत्य होती, तो शायद संसार से सतीत्व धर्म अब तक उठ गया होता। लुच्चे-गुंडों ने गृहस्थ धर्म की पवित्रता को कब समाप्त कर दिया होता है।

यदि आप अब तक ऐसा विचार किए हुए हों कि किसी स्त्री का सतीत्व अधर्मपूर्वक, वशीकरण मंत्र की सहायता से नष्ट करेंगे, तो उन विचारों को अपने मन से इसी क्षण हटा दीजिए। इस मार्ग से किसी की मानसिक चेतना को किसी तंत्र शक्ति से अर्द्ध निद्रित कर व्यक्ति की स्वेच्छा आपको प्राप्त न होगी। क्या ऐसा संयोग कुछ तृप्ति दे सकता है ? दूसरे यह निद्रा अधिक समय तक कायम नहीं रखी जा सकती। इसलिए जब भी वह जाग्रत् होगा, पहले की अपेक्षा और अधिक घृणा करने लगेगा एवं विरोधी बन जावेगा, इसलिए सबसे प्रथम इस मार्ग में आगे बढ़ने से पूर्व यह विचार कीजिए कि आप कोई धर्म विरुद्ध कार्य तो नहीं कर रहे हैं। यदि कर रहे हैं, तो तुरंत ही पीछे हट जाइए। यदि आपका मार्ग विरुद्ध है, केवल रूठे को मना रहे हैं, तो बात अलग है। पति-पत्नी में आपस में अनबन रहती हो, तो वह एक-दूसरे को मनाने या आकर्षित करने का प्रयत्न कर सकते हैं। जहाँ पति-पत्नी का चुनाव

आपस में ही करने की स्वतंत्रता है, वहाँ भी ऐसे प्रयत्न उचित समझे जाएँगे।

किसी के हृदय को केवल बातूनी जमा खर्च या मंत्र जप से वश में नहीं किया जा सकता। दो मनुष्यों का सम्मिलन, किन्हीं स्वार्थों के आधार पर होता है। योग्यता ही वह आकर्षण है, जो दूसरों के हृदय में अपने लिए स्थान बनाती है। शारीरिक, बौद्धिक और आर्थिक योग्यताओं को दंपत्ति चुनाव में प्रमुख स्थान मिलता है। आपकी ये योग्यताएँ जितनी ही ऊँची होंगी उतना ही पात्र को आकर्षित करने में सहायता मिलेगी। यदि आपका प्रेमी धार्मिक या अन्य किसी विशिष्ट कारण से केवल आपसे व्यक्तिगत रूप से उदासीन है, तो समझना चाहिए कि उपरोक्त तीन कारणों में से कोई न कोई बात अवश्य होगी। उन्हें सुधारना चाहिए। कम-से-कम इतना सुधार तो अवश्य करना चाहिए कि दूसरे पक्ष को काम चलाऊ संतोष हो जाए। हार्दिक प्रेम का स्थान बहुत ऊँचा है, पर ऊँचे प्रेमी अपने प्रिय मित्र से कुछ लेने की नहीं, वरन् देने की इच्छा करते हैं। साधारण मनुष्य जो दांपत्य संबंध स्थापित करने के इच्छुक हैं, उन्हें अपनी योग्यताओं को ठीक करना चाहिए। बिना इसके वह दूसरे के मन को नहीं जीत सकता। एक नवयुवती अपने वृद्ध पति को शायद ही कभी हृदय से प्रेम करे, चाहे वह स्त्री को कितना ही चाहता हो या उसके पास कितना ही धन क्यों न हो। इसी प्रकार बदमिजाजी के कारण भी मन नहीं मिलते। बड़बड़ाने, संदेह करने, अपशब्द कहने, जरा-जरा सी बात पर तुनक जाने आदि बातें भी ऐसी बेहूदी हैं कि धन और शरीर की योग्यताओं के बावजूद भी कलह के बीज बोती हैं। मूर्खता, मंद बुद्धि, व्यावहारिक ज्ञान की कमी, उदासीनता इन कारणों से भी दूसरा पक्ष असंतुष्ट हो जाता है। धन का कारण चाहे तीसरा है, तो भी उसका बहुत कुछ महत्त्व है। शारीरिक और मानसिक योग्यता अच्छी होने पर भी यदि आर्थिक दशा ठीक नहीं है, तो बड़ी कठिनाई का सामना

करना पड़ता है। कमाने का भार पुरुष पर होता है, यदि पुरुष निरुद्यमी है या उसकी उपार्जन शक्ति न्यून है, तो चंचल स्वभाव की स्त्री से उसे तिरस्कृत होना ही पड़ेगा। शरीर और मन की योग्यता का अभाव बहुत बड़ा कारण है। दंपत्ति में से जो इन योग्यताओं को खो देगा, वह दूसरे पक्ष को असंतुष्ट कर देगा। दांपत्य जीवन यथार्थ में एक साझे की दुकान है, जो समान योग्यता की आवश्यकता रखती है। संतान उत्पन्न करने का कार्य स्त्री के हिस्से और धन उत्पन्न करना पुरुष के हिस्से में है। देश की बढ़ी हुई गरीबी, शारीरिक स्वास्थ्य की निर्बलता, पालन-पोषण की असुविधा आदि कारणों से संतानोत्पत्ति कम से कम होनी चाहिए। इस दृष्टि से यदि स्त्री संतानोत्पन्न न करे, तो कुछ हर्ज नहीं, किंतु पति का कार्य अनिवार्य है, उसे पैसा कमाना ही चाहिए।

चरित्रहीनता या प्रेम की कमी, यह आध्यात्मिकता का अभाव है। वास्तव में देखा जाए, तो इन्हीं दोनों की आवश्यकता सबसे अधिक है, पर इस युग में तो पिछली तीन भौतिक बातों पर ही अधिक ध्यान दिया जाता है। आप किसी को अपने सहयोग के लिए तैयार करना चाहते हैं, तो अपनी योग्यताओं को उसकी रुचि के अनुकूल बनाइए। यह वशीकरण का उत्तम मार्ग है।

एक हीन प्रकार का तीसरे दर्जे का वशीकरण देश में और प्रचलित है। यहाँ परदे की प्रथा के कारण निर्धारित सीमा के अंदर ही स्त्री, पुरुष आपस में मिल सकते हैं। इसलिए दोनों की इच्छा होते हुए भी प्रेमी आपस में नहीं मिल पाते। इसके विपरीत वासना की प्रबलता के कारण अथवा अन्य स्वार्थों से प्रेरित होकर अरुचिकर और अयोग्य संबंध स्थापित हो जाते हैं। बहकावा, ठगी, लोभ, अज्ञान ऐसे संबंधों की जड़ में होता है। अपहरण आदि की दुःखद घटनाएँ अधिकतर होती हैं, जिनमें दोनों की नाम मात्र की पसंदगी होती है, किंतु तात्कालिक कारण प्रबल होते हैं। यह बहकावे या किसी प्रकार इंद्रिय शांति के निमित्त किए गए सहयोग

एक प्रकार के नारकीय समझौते हैं, जिनमें समझौते की हजार शर्तों में से एक ही पूरी होती है। यह समझौते बहुत कमजोर होते हैं और बात की बात में टूट जाते हैं।

योग्यता और तात्कालिक स्वार्थ के वशीकरण इन्हीं दोनों का प्रचलन आज अधिक है। इनके लिए दूसरे पक्ष की खुशामद, मीठी बातें, सहायता, प्रशंसा, निकट संपर्क में रहना, लोभ, भेंट, पुरस्कार, तरह-तरह के वायदे आदि द्वारा काम चलाया जाता है। एक चलता पुरजा आदमी इन बातों को अपने आप जानता है या दूसरे अपने सहकर्मियों से सीख लेता है। चेतावनी और दिग्दर्शन के तरीके पर इस संबंध में कुछ प्रकाश डाल देने के अतिरिक्त इस विषय में कुछ चर्चा करने से हमारा कुछ प्रयोजन नहीं है। जिन्हें वैध रूप में दांपत्य संबंध स्थापित करने की सुविधा है, वे अपनी योग्यताओं, सद्गुणों, आंतरिक सदिच्छाओं और निष्कपट प्रेम का परिचय देकर दूसरे पक्ष को आकर्षित कर सकते हैं। यदि उनने अपने प्रेमी का चुनाव समान दर्जे का किया है और प्रिय पात्र के सम्मुख कोई अधिक उत्तम अवसर नहीं है, तो आपको सफलता मिलेगी। अपने से बहुत असम्मान परिस्थिति के व्यक्तियों में या तो मैत्री होती ही नहीं, यदि हो भी जाए तो बहुत जल्द टूट जाती है, इसलिए प्राथमिक इच्छा उठते ही इन बातों पर विचार कर लेना चाहिए कि जिस मैत्री को हम चाहते हैं, वह संभव भी है कि नहीं, यदि असंभव प्रतीत हो, तो अधिक काँटों में उलझने की अपेक्षा पहले ही समझ से काम लेना चाहिए। आध्यात्मिक मित्रता बहुत उच्चकोटि की है। एक प्रेम-बंधन में बँध जाने के उपरांत प्रेमी प्राण देकर भी पूरी तरह निभाता है। "अंध बधिर रोगी अति दीना।" जैसे पतियों को भी ईश्वरतुल्य समझकर पूजने वाली और चाहे जैसी अल्प योग्यता की स्त्री हो, उसे लक्ष्मी के समान आदर करने वाले दंपत्ति कम मिलते हैं, पर वास्तव में उन्हीं का प्रेम सराहनीय है। कर्तव्य

और धर्म को वशीकरण मानकर, जो स्वेच्छा से उसके बंधन में बँधे हुए हैं, उन्हीं का वशीकरण धन्य है।

अब प्रश्न यह उठता है कि यदि एक पक्ष अनुचित मार्ग पर हो तो क्या करना चाहिए ? यदि धर्म-बंधन में बँधने से पूर्व ऐसी स्थिति उपस्थित हो, तो घोर विरोध करना चाहिए। यदि रोगी या अयोग्य पति के साथ विवाह कराया जा रहा हो, तो कन्या का धर्म है कि प्राणपण से उसका विरोध करे और इस संस्कार में सम्मिलित होने से इनकार कर दे, इसी प्रकार किसी लोभ से यदि अयोग्य कन्या का पाणिग्रहण कराया जा रहा हो, तो पति को ऐसा विवाह करने से इनकार कर देना चाहिए। किंतु यह विरोध, विवाह करने से पूर्व तक ही उचित है। एक धर्म-बंधन में बँध जाने पर एक-दूसरे को निभाना ही कर्तव्य है। माना कि विपरीत परिस्थितियों में हार्दिक ऐक्य नहीं हो सकता है तो ऊँचे पक्ष का कर्तव्य है कि नीचे पक्ष को स्वयं कष्ट सहकर निभा ले और गृहस्थी को कलह की नाट्यशाला न बनावे, क्योंकि गृह-कलह का अपने परिवार पर तथा परिवार से बाहर भी अनेक व्यक्तियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव अप्रत्यक्ष रूप से समाज में बड़ा उपद्रव उत्पन्न कर सकता है, इसलिए जो हो गया, उसे हर दृष्टि से अपनी भूल का प्रायश्चित करने की दृष्टि से भी सहन करना उचित है।

प्रसन्नता के कारणों में से जिनका सुधार नहीं हो सकता हो, उनके लिए ईश्वरेच्छा समझकर संतोष करना चाहिए। जैसे एक पक्ष कुरूप, अंग-भंग, वृद्ध या संतानोत्पादन में असमर्थ या ऐसी ही किसी स्थायी शारीरिक अयोग्यता से ग्रसित है, तो उसे सहन ही करना पड़ेगा। यदि रोग या दुर्बलता से पीड़ित है, तो उसकी चिकित्सा करानी चाहिए, इसी प्रकार बौद्धिक या आर्थिक उन्नति के लिए परस्पर मिलकर प्रयत्न करना चाहिए। जैसे भी उचित हो काम चलाऊ समझौता कर लेना चाहिए। बुद्धिमान् पक्ष को चाहिए कि कलह के बीजांकुरों को बढ़ने न दे, अपनी सहनशीलता का परिचय

देकर तथा दूसरे पक्ष को अधिक सुविधा देकर झगड़े को निबटा लेना चाहिए। एक-दूसरे से निजी संबंध रखने वाले दोषों का समाधान इस प्रकार हो सकता है, किंतु एक पक्ष किन्हीं लज्जा-जनक कुटेवों में ग्रसित हो, तो दूसरे पक्ष को चाहिए कि जैसे भी बन सके उसकी बुरी आदतों को छुड़ावे। केवल विरोध, झगड़ा या बदनामी करने में कुछ सफलता नहीं मिल सकती, इससे तो दूसरा और भी अधिक हठी, चिड़िचिड़ा एवं दुराग्रही बन जावेगा। वह गुप्त या प्रकट रीति से अपनी आदतों को विरोध की प्रतिक्रियास्वरूप जारी रखेगा, इसलिए यदि दंपत्ति में से कोई किसी कुटेव में ग्रसित हो, तो मामूली कहने-सुनने के अतिरिक्त अत्यंत उग्र झगड़ा कभी न करना चाहिए। दुर्गुणी पर दूसरों के कहने का उतना असर नहीं पड़ता। अस्तु, ऐसे अवसर उपस्थित करने चाहिए कि वह स्वयं ही अपनी भूल की गंभीरता अनुभव करे और लज्जित होकर प्रायश्चित की ओर झुके। शराबी और व्यभिचारी पतियों को बुद्धिमान् स्त्री आसानी से सुधार सकती हैं। देखने में यह दो दुर्गुण प्रतीत होते हैं, परंतु इनका मूल एक ही कारण है, वह है—"मनोरंजन का अभाव।" पत्नी का कर्तव्य है कि पति के मनोरंजन की समुचित व्यवस्था रखे। काली-कलूटी स्त्रियाँ भी यदि पति की मनोवृत्तियों को पहचानती हुई उन्हें प्रसन्न रखने की कला को समझ लें, तो वे उन्हें कुमार्ग से बचाकर अपना गृहस्थ जीवन सुखमय बना सकती हैं। रूठने, अभिमान, करने, जिद्दी होने और अपनी भूल को अनुभव न करने से कलह बढ़ता है, कर्कश स्वर से द्वेष पैदा होता है, इसलिए दूसरे पक्ष से आपको जो शिकायत है एकांत में गंभीरतापूर्वक प्रेम और सरलता के साथ कहिए। मन में जो संदेह या शिकायत उठे, उसका शीघ्र ही निराकरण कर लीजिए अधिक समय तक अविश्वास के मिथ्या विचार भी मन में पड़े रहें, तो अपना स्थान बना लेते हैं।

दांपत्य जीवन को शुद्ध रखने के लिए आवश्यक है कि हृदय इतना उदार हो कि उसमें संदेह को उठने का स्थान ही न हो। यदि उठे भी तो उसका समाधान उससे ही करना चाहिए, जिसके प्रति संदेह उठा हो। दुनिया में तीन-चौथाई झगड़े भ्रम के कारण होते हैं, वास्तविक कारण चौथाई से भी कम होते हैं। यह भ्रम ही बढ़ते-बढ़ते ऐसा विकट रूप धारण कर लेते हैं कि उनके द्वारा लोमहर्षक परिणाम उपस्थित होते हैं। यदि हम इस सिद्धांत को अपना लें कि जिनकी शिकायत हो, उसी से पूछकर अपना समाधान करें, तो निश्चय ही हमारा जीवन कलह से मुक्त हो सकता है। शिकायत कड़ुई होती है और चूँकि लोग कड़वी बात कहने-सुनने के आदी नहीं होते, इसलिए वे उन बातों को पेट में ही डाले रहते हैं। पेट में पड़ी-पड़ी वे बातें चक्रवृद्धि ब्याज की रीति से बढ़ती रहती हैं और तिल का ताड़ बन जाती हैं। दुनिया में सुख-शांति फैलाने के लिए इस बात की आवश्यकता है कि आप कड़वी बात को मीठे शब्दों में कहने की कला को सीख जाएँ, एकांत में अपने संदेह को निवारण करने की इच्छा के लिए विशुद्ध भाव से यदि किसी से पूछा जाए, तो वह वास्तविक बात का बहुत कुछ अंश अवश्य बता देगा। यदि नहीं भी बतावे, तो यह पूछना ही उसके लिए सौ विरोधों और हजार उपदेश से अधिक काम कर सकेगा, ऐसे प्रश्नों से आदमी अपनी कीर्ति की रक्षा के लिए तुरंत सावधान हो जाता है और यदि वह दुर्गुण उसके अंदर प्रवेश हुआ तो तुरंत ही त्याग देता है। कड़ुई बातों में स्वयं नाराज करने वाली कोई वस्तु नहीं है, नाराज तो आदमी तब होता है, जब कर्णकटु शब्दों में, अपमानित-लांछित या बदनाम करने की बुरी नीयत से सबके सामने पूछा जाए। आप अपने प्रियजन की शिकायत सुनें कि प्रेमपूर्वक उसी से एकांत में पूछें, इसी में दोनों का ही हित है।

प्रियजन का वशीकरण

बाहर के लोगों का राग-द्वेष इतना महत्त्व नहीं रखता, जितना परिवार का। बाहर के विरोधी को परास्त करने के लिए अनेक प्रकार के मार्ग ढूँढ़े जाते हैं, किंतु परिवार के सदस्य की बात दूसरी है। यदि पुत्र नाराज हो जाए, तो उससे वैसा व्यवहार नहीं किया जाएगा जैसा कि पड़ोसी से किया है। इस देश में सम्मिलित परिवार में रहने की प्रथा होने के कारण प्रायः कई व्यक्ति अपने स्त्री-बच्चों सहित एक साथ रहते हैं। इस पूरे परिवार का एक व्यक्ति प्रमुख संचालक होता है। साधारणतः इस संचालक के हाथ में परिवार की शांति-सुव्यवस्था होती है। यदि वह चाहे तो सबको प्रसन्न रख सकता है। सम्मिलित परिवारों में आर्थिक भेदभाव के कारण अक्सर मनमुटाव पैदा होते देखा जाता है। भोजन, वस्त्र तथा अन्य खर्चों में भेदभाव या पक्षपात का व्यवहार करने से असंतोष के अंकुर उत्पन्न होते हैं। योग्यता, अवस्था, स्थिति के अनुसार घर के लोगों से अलग-अलग व्यवहार होता है, पर उसमें न्याय बुद्धि होनी चाहिए, पक्षपात नहीं। सम्मिलित परिवार तभी तक चल सकते हैं, जब तक कि कपट भाव का समावेश नहीं होता, इसलिए गृहपति की यदि यह इच्छा है कि मेरा परिवार अलग-अलग न हो और मैं सबको वश में किए रहूँ, तो उसे बड़ी सावधानी और सतर्कता के साथ अपने कार्यों का निरीक्षण करते रहना चाहिए कि कहीं इसमें ऐसा प्रसंग तो उपस्थित नहीं हो रहा है, जिसमें किसी को उँगली उठाने का अवसर मिले, यदि गृहसंचालक अज्ञानवश ऐसा कर रहा हो, तो उसे सचेत हो जाना या कर देना चाहिए। यदि घर के किन्हीं लोगों में झगड़ा चल रहा हो, तो उसे प्रेमपूर्वक सुलझा देना चाहिए। झगड़े की जड़ आरंभ में ही काट देनी सुगम होती है, पर आगे जब उसकी बेल बहुत बढ़ जाती है, तो सँभालना कठिन होता है।

वाद-विवाद और पैसे के लेन-देन में बड़ी साफ प्रवृत्ति की आवश्यकता है। यदि छोटे दिल के लोग राजनैतिक, धार्मिक या अन्य विषयों को भी अपनी क्षुद्रता के कारण व्यक्तिगत रूप में ले आते हैं। किसी दूर के विषय पर बातचीत करते, ताश, शतरंज खेलते या मामूली हँसी-मजाक करते-करते लोग लड़ने-मरने लगते हैं, इसका कारण "तंग दिली" है। वे खेल, मजाक या वाद-विवाद के विषय की हार-जीत को अपनी हार मान लेते हैं, बस उनका पारा गरम हो जाता है। यदि किसी विषय पर वाद-विवाद करना हो, तो देख लेना चाहिए कि इसका तंग दिल तो नहीं है। उसकी हार्दिक विशालता पर संदेह हो, तो विवाद से पूर्व ही तय कर लेना चाहिए कि इसका परिणाम लड़ाई तो न होगी ? फिर भी जहाँ तक हो, किसी भी प्रकार की प्रतियोगिता का कम से कम अवसर आने देना चाहिए, क्योंकि हार-जीत झूँठी ही क्यों न हो, उनका प्रभाव हुए बिना रहता नहीं। पैसे का लेन-देन भी इसी प्रकार का है। हर आदमी को लेना अच्छा और देना बुरा लगता है। छोटे दिल के लोग देने की इच्छा नहीं करते, उनके पास हो तो भी नहीं देना चाहते। इसलिए जब तक दिल खुले न हों, पैसे का देन-लेन आपस में न बढ़ावें, क्योंकि यह मित्रता को भंग कर सकता है।

छोटे बच्चे बिलकुल अज्ञान ही हों, ऐसी बात नहीं। अभी यह क्या समझता है, ऐसा समझकर बालकों के साथ हीनता का व्यवहार करना वैसा ही बुरा है जैसा बड़े आदमियों के साथ दुर्व्यवहार करना। बालकों की बाह्य बुद्धि भले ही अविकसित हो, पर उनकी अंतरात्मा सदैव चैतन्य है। आपकी भावना का उस पर अवश्य ही प्रभाव होगा। वास्तविक और बनावटी प्रेम को बालक तुरंत ताड़ जाते हैं। यदि किसी बच्चे के साथ छोटेपन में हीनता का बर्ताव किया जाए, तो वह बड़ा होने पर उस मनुष्य से कदापि प्रेम न करेगा। उसका आंतरिक मस्तिष्क अप्रिय व्यवहार की ठोकरें खाकर ऐसा हो जावेगा कि उससे फिर किसी प्रकार मिल न

सकेगा। जिन बालकों को बड़ा होने पर अपना स्नेही बनाना चाहें, उनसे उनके बचपन में उचित और प्रेमपूर्ण व्यवहार कीजिए। बिना इसके बड़ी आयु में उन्हें अपना प्रिय पात्र नहीं बनाया जा सकता। मार-पीट, डाट-फटकार करना, मूर्ख बताना या उन्हें तिरस्कृत लांछित करना बहुत ही बुरा है, इसका प्रभाव यह होता है कि आगे चलकर वे बालक उद्दंड और अवज्ञा करने वाले बन जाते हैं।

दस-बारह बर्ष के बच्चे का स्वाभिमान अधिक जाग्रत् हो जाता है, उनका वैसा ही आदर करना चाहिए जैसा बड़ी आयु के मनुष्यों का किया जाता है। बेशक उनका ज्ञान बड़ी आयु के व्यक्तियों की अपेक्षा कुछ कम होता है, पर इसी से वे नीची दृष्टि से नहीं देखे जाने चाहिए। कितने ही बड़ी आयु के मनुष्य ऐसे हो सकते हैं, जो अनेक बातों में इन बालकों से भी कम ज्ञान रखते हों, पर क्या उन्हें अपमानित किया जाता है ? छोटा होना ही यदि तिरस्कार की बात होती, तो राजा बड़ा होने के कारण हम सबको अपमानित करता और ईश्वर राजा से भी अपनी जूती उठवाता। यह बड़ी अनुचित बात है कि किशोर बालकों को शारीरिक दंड दिया जाए या उनसे अपशब्द कहे जाएँ। यदि आप प्रेम और समझदारी से किसी को वश में नहीं कर सकते तो, विश्वास रखिए कि मार-पीट करके भी किसी को काबू में नहीं रख सकते। नित्य ऐसी घटनाएँ हमारे सुनने में आती हैं कि अमुक का लड़का घर छोड़कर भाग गया और उसकी जोरों से तलाश हो रही है। असल में घर छोड़कर भागना बाल बुद्धि के अनुसार एक प्रकार की आत्महत्या है, जिसे हताश और किंकर्तव्यविमूढ़ बालक ही करते हैं। कुछ बहकावे में आए हुए या मटरगश्त लड़कों को छोड़कर अधिकांश भगोड़े बालक ऐसे ही होते हैं, जो घर वालों के दुर्व्यवहार के कारण भागते हैं। कभी-कभी बालकों के मन में भ्रमण आदि की उत्कट इच्छाएँ उठती हैं, उन्हें मसलना न चाहिए, वरन् यथाशक्ति उनका कुछ अंश पूरा करने का प्रयत्न करना चाहिए। बीस-बाईस

वर्ष से अधिक उम्र के लड़के जो पढ़ नहीं रहे हैं, वरन् उद्योग कर रहे हैं, वे घरेलू कार्य से हाथ खर्च के लिए कुछ नहीं पाते, तो बाहर नौकरी करने के लिए भागते हैं, ताकि घर वाले उनसे कुछ कहा-सुनी न करें। ऐसे लड़कों की वृत्तियों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण यह है कि वे अपनी उपार्जन शक्ति का फल स्वतंत्र रूप से देखना चाहते हैं। उन्हें यदि सम्मिलित रखना है, तो उनकी आमदनी-खर्च का हिसाब उनके सामने रखना चाहिए और नफा-नुकसान की जिम्मेदारी हिस्सेदार की तरह उन पर भी डालनी चाहिए। कोरा कागजी जमा खर्च नहीं। कभी-कभी उनके हाथ में पैसा आना भी चाहिए। यदि ऐसी सुविधा न हो तो द्वेष भाव से नहीं, वरन् प्रसन्नतापूर्वक उन्हें अलग कोई रोजगार करने की स्वीकृति देनी चाहिए। विदेशों में वयस्क लड़कों को उनके संरक्षक आर्थिक दृष्टि से प्रायः पूरा स्वतंत्र कर देते हैं। माता-पिता उन्हें नौकरी पर लगाने या कारोबार चलाने में पूरी-पूरी मदद करते हैं और लड़कों को स्वावलंबी देखकर अपनी तौहीन नहीं, बल्कि इज्जत अनुभव करते हैं। जवान लड़कों को आर्थिक स्वाधीनता देने से 'बना घर बिगड़ता' नहीं, वरन् बिगड़ा घर बन जाता है। व्यवहार की उत्तमता प्रियजनों के लिए बहुत ही बढ़िया वशीकरण प्रमाणित होती है।

पांच अन्य साधन

(१) निरोगता—वशीकरण के साधक को अपने में कुछ अन्य योग्यताएँ भी पैदा करनी होती हैं, क्योंकि उनका वाह्य प्रभाव से बड़ा घनिष्ठ संबंध है। उत्तम स्वास्थ्य-यह एक सबसे बड़ी आवश्यकता है। जिनका शरीर नीरोग है, उन्हीं की नाड़ियों में शुद्ध रक्त उत्पन्न होगा और उस रक्त के कारण उत्तम सौंदर्य प्रकट होगा। किसी आदमी का रंग तो गोरा है और बनावट भी बहुत बढ़िया है, किंतु स्वास्थ्यहीन है, इसलिए चेहरा पीला पड़ रहा है, मुँहासे से मुरझाया हुआ है, आँखों में दीनता है, पीड़ा और

असमर्थता उसके अंग-अंग से झर रही है, ऐसी स्थिति में उसका रूपवान् होना कोई अर्थ नहीं रखता। इसके विपरीत काले रंग का या मामूली आकृति का व्यक्ति यदि स्वस्थ है, तो उसकी सुंदरता बहुत बढ़ी-चढ़ी होगी। सुंदरता, अंगों की बनावट में नहीं, वरन् उस तेज में है, जो शुद्ध रक्त के द्वारा उत्पन्न होता है, इसी तेज को मानवीय विद्युत् शक्ति या आकर्षण शक्ति भी कहते हैं। दूसरों को वश में करने और उन पर अपना असर डालने में यह जादू की तरह आश्चर्यजनक प्रतीत होता है। लंपट पुरुष, उत्तम स्वास्थ्य पर आसक्त होते देखे गए हैं, चाहे उनमें अन्य कोई गुण न भी हो। सब दृष्टियों से विचार कीजिए कि संपूर्ण सुखोपभोगी का प्रथम साधन स्वास्थ्य है। यदि आपकी तंदुरुस्ती अच्छी नहीं है, तो वशीकरण का सारा प्रयास नीरस प्रतीत होगा, आप सबसे पहले अपनी तंदुरुस्ती को ठीक रखने के लिए प्रयत्नशील रहिए। इसके लिए डॉक्टरों की सलाह लेने या किसी बड़े पचड़े में पड़ने की जरूरत नहीं है। उत्तम स्वास्थ्य हमारी बपौती है। परमपिता परमात्मा ने हमें स्वस्थ बनाकर भेजा है और उसकी इच्छा है कि हम लोग सदैव निरोग रहें। रोग अपने आप प्रायः नहीं आते, उन्हें हम बड़ी खातिर खुशामद से बुलवाते हैं या भारी कीमत देकर मोल खरीदते हैं। "जीभ और गुप्तेंद्रिय पर यदि काबू रखा जाए, तो बीमारी पास नहीं फटक सकती।" इस वाक्य को गाँठ बाँध लीजिए। बीमार पड़ जाने पर नाना प्रकार के दुःख भोगने और उनसे छुटकारा पाने के लिए बड़े-बड़े प्रयत्न करें, इससे तो यही अच्छा है कि पहले ही सावधान रहा जाए। बिना भूख लगे मत खाइए। स्वाद के लिए मत खाइए, पेट को ठूँसकर मत खाइए और बिना चबाए मत खाइए। इन चारों बातों पर ध्यान रखने से तंदुरुस्ती की समस्या बहुत कुछ हल हो जाती है, जब भूख लगे तब ऐसा भोजन कीजिए जो सात्त्विक और पौष्टिक हो, पेट को थोड़ा खाली रहने दीजिए और हर ग्रास को दाँतों से इतना पीसिए कि वह अपने आप पेट में चला

जाए। निगलने के लिए झटके लेने की बिलकुल जरूरत न पड़े। ईश्वर आपको जैसा घटिया-बढ़िया भोजन दे, उसी में संतोष कर लीजिए, यह मत सोचिए कि कीमती चीजों में ही ताकत होती है। जीभ को काबू में रखकर खाई हुई जौ की रोटी, मेवा-मिठाइयों से बढ़कर बलकारक प्रमाणित होती है। जिस प्रकार धन जोड़ने के लिए आमदनी बढ़ाना, खर्च कम करना आवश्यक है, उसी प्रकार स्वास्थ्य बढ़ाने के लिए जिह्वा पर काबू रखना चाहिए और उसे संचित रखने के लिए ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। वीर्य ही जीवन है, उसे नष्ट मत होने दीजिए। जितना अधिक हो सके, दीर्घकालीन ब्रह्मचर्य रखिए। वीर्य जैसी अनमोल वस्तु को कदापि व्यर्थ नष्ट न होने दीजिए। शारीरिक और मानसिक गुणों को चेतना देने वाली वस्तु वीर्य है, इसलिए गुप्तेंद्रिय पर काबू रखिए और उसे कुमार्ग पर मत जाने दीजिए। इन दोनों इंद्रियों को काबू में रखने से आपका स्वास्थ्य बहुत उत्तम रह सकता है। अन्य स्वास्थ्य संबंधी साधारण नियमों को सब लोग जानते हैं। उनका यथाविधि पालन करना चाहिए।

(२) प्रसन्नता—प्रसन्न रहना, हँसते-मुस्कराते रहना—यह वशीकरण की साधना में बड़ा ही दिव्य अस्त्र है। फूल जब खिलता है, तो बरबस सबका मन अपनी ओर खींच लेता है। मुख की बंद कली में से दाँतों की पंखुरि जब आप खोल देंगे, तो यह स्वर्गीय पुष्प बड़ा ही सुंदर बन जाएगा और दूसरों के मन को लुभा लेगा। फूल जब तक अपने दातों को होठों के अंदर बंद किए रहता है, तब तक उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देता। कहते हैं कि 'हँसने से मुँह से फूल झड़ते हैं।" हँसना एक कला है, जिसमें विश्व की सहानुभूति को अपनी ओर खींच लेने का गुण है। हँसना एक मरहम है, जो दूसरों के दर्द से भरे हुए जीवन को आराम पहुँचाता है। जब आप हँसते हैं, तो ऐसे सुंदर चित्र बन जाते हैं, जिसे देखने के लिए बच्चे भीड़ लगाए रहते हैं। जब आप हँसते हैं तो ऐसे पुष्प बन

जाते हैं, जिन पर मधु-लोलुप मक्खियाँ सदैव भिनभिनाती रहती हैं। जिसके चेहरे पर मुस्कराहट नाचती है, उसके मन में ईर्ष्या, द्वेष, चिंता, कुढ़न को स्थान नहीं मिलता है। आज आपका किसी से झगड़ा हो जाता है, कल उससे मिलते हैं तो प्रेम के साथ मुस्करा जाते हैं बस जरा-सी बात में सारा वैर-विरोध दूर हो गया। एक अरबी विद्वान् का कथन है, "खुदा ने कामयाबी की नियामत खुश मिजाज लोगों के लिए बनाई और बद-किस्मती का मर्शिया पढ़ने वालों का लानत बख्शी।" बात ठीक है। आप अपने दुर्भाग्य, घाटे, अपमान, दुःख, निराशा का रोना रोवें तो सब लोग नाक-भौं सिकोड़ेंगे। दुनिया में किसी को इतनी फुरसत नहीं कि वह आपका रोना सुने और अपने को रंजीदा बनावे। आप हँसेंगे तो दूसरे भी साथ-साथ हँसेंगे, रोवेंगे तो दुत्कारकर अलग कर लिए जावेंगे। इसलिए अपने दुर्भाग्य का रोना कभी मत रोइए, यदि सचमुच कोई मुसीबत आई हुई है, तो भी हँसिए, इससे दुःख हलका हो जाएगा और जग हँसाई नहीं होगी। आप कुरूप हैं, तो कोई हर्ज नहीं, जरा मुस्कराइए तो सही आपके मुँह से फूल बरसने लगेंगें। हँसना, यह एक कला है, जो मनुष्य के पहाड़ के समान दुःख को भी हलका कर देती है, जो जीवन को सरस और स्निग्ध बना देती है। जिसके मुँह पर मृदुल हँसी की रेखा खिंची होती है, उसके प्रति कौन आकर्षित नहीं होता ? ईश्वर बालकों को छोटेपन से ही यह गुण सिखा देता है। हँसना आत्मा का सर्वप्रिय गुण है, यह दूसरों को वश में ही नहीं करता, वरन् उन्हें शांत और मुक्त भी बना देता है।

(३) पवित्र विचार—अच्छे विचार और निःस्वार्थ भावनाओं में यह शक्ति है कि वे अपने चारों ओर एक विशेष प्रकार का वातावरण बना लेते हैं, जिसमें वशीकरण का पूर्ण प्रभाव होता है। ऋषि-महात्माओं के आश्रमों में सिंह और हिरण पास-पास बैठे रहते हैं। दुष्ट स्वभाव के जीव-जंतु भी वहाँ पहुँचकर अपना स्वभाव भूल जाते हैं। महात्मा बुद्ध से अप्रसन्न होकर एक डाकू उन्हें मारने

आया, पर जैसे ही सामने पहुँचा, कि उसके हाथ काँप गए और उनके चरणों में गिर पड़ा। दासूर नामक एक व्यक्ति जब हजरत मुहम्मद साहब को मारने पहुँचा, तो तलवार उसके हाथ से गिर पड़ी। स्वामी रामतीर्थ भयानक जंगलों में रात-रात भर घूमते रहते थे। कितनी ही बार शेर, रीछ आदि से उनकी भेंट हुई, पर किसी ने उन्हें हानि नहीं पहुँचाई। विचारों में एक ऐसी शक्ति होती है कि वे अपनी जाति के विचारों को अखिल आकाश तत्त्व में से खींच लाते हैं। शुभ विचार अपने ही समान अन्य लोगों के विचारों को खींच लाते हैं। जो लोग प्रेम और पवित्रता के विचार करते रहते हैं, उनके ऊपर संसार की सहानुभूति और सद्भावनाएँ उमड़-उमड़कर आती हैं और प्रसन्नता की छाया से चारों ओर ढक देती हैं। जिनका उद्देश्य ऊँचा है, जो भलाई के विचार सामने रखकर किसी कार्य में प्रवृत्त होता है, उसको पग-पग पर सफलता है, हार भी उसके लिए जीत है। श्रीमती लिली ऐलन कहती हैं, "वास्तविक शक्ति और बल पवित्रता में है। जिस मनुष्य के कर्म अच्छे हैं, जिसने मस्तक पर कलंक का टीका नहीं लगाया और जिसकी गर्दन किसी के सामने शर्म से नीची नहीं झुकती, वह सच्चा बहादुर है। ऐसे आदमी के गले में विजयमाला पहनाई जाएगी। उसके चेहरे के आस-पास वैभव की वास्तविक आभा चमकती होगी, जिस रास्ते से वह निकलेगा ईंट-पत्थर तक उसके आगे अपना हृदय बिछा देंगे। पवित्रता के बिना ऐसा व्यक्तित्व और किसी प्रकार प्राप्त नहीं हो सकता।" श्री अरनाल्ड कहते हैं, "पवित्रता की शक्ति अपार है, उसका कोई अंत नहीं। यह बल साधारण नहीं, वरन् एक दैवी तेज है। यदि आपके विचार ईमानदारी के हैं, तो हमारी घोषणा है कि लोगों के हृदय का राज्य आपके लिए है।"

(४) मधुर भाषण—भोजन के छहों रसों में मधुर रस अग्रणी है। बच्चे से लेकर बड़े तक सभी मीठे को पसंद करते हैं। इसमें इतनी मधुरता है कि मनुष्य तो क्या देवता भी इसे पसंद करते हैं।

हवन यज्ञों में मीठे का भोग अवश्य होता है। ब्राह्मणों को मीठा खिलाने में अधिक पुण्य बताया जाता है। संसार में सबसे अधिक मीठी बोली है। मधुर भाषण जैसी मिठास भला और कहाँ मिल सकती है ? तुलसीदास जी कहते हैं—'वशीकरण एक मंत्र है, तज दे वचन कठोर।' रहीम कहते हैं—कागा काको धन हरे कोयल काको देय, मीठे वचन सुनाय के जग वश में कर लेय।' हिरण मधुर शब्द सुनकर भागना भूल जाते हैं, बीन सुनने के लिए साँप बिल से बाहर निकल आते हैं। एक विद्वान् का कथन है—"भाषण में वशीकरण शक्ति है।" इससे पराये अपने हो जाते हैं। सर्वत्र मित्र ही दृष्टिगोचर होते हैं। मधुर वाणी एक दैवी वरदान है। मोहनास्त्रों में इसे शिरोमणि कहते हैं।

किसी के साथ भलाई की है, उसे प्रकाशित मत कीजिए। किस स्थान पर आपका धन गढ़ा हुआ है, यह जगह-जगह बताते फिरें, तो वह चोरी चला जाएगा, इसी प्रकार किया हुआ उपकार यदि आप प्रकाशित कर देंगे, तो वह नष्ट हो जाएगा। बाइबिल में कहा है, "जो तू करता है, उसे इस तरह कर कि एक हाथ के काम को दूसरा हाथ न जानने पावे।" अपने शत्रुओं को क्षमा कर इससे वे मित्र होंगे एवं प्रेम का सागर लहराता हुआ नजर आवेगा। किसी से कडुए शब्द मत बोलिए, क्रोध में भी अपशब्द मत कहिए, छोटों को भी तू जैसे कर्ण कटु शब्दों से संबोधित मत कीजिए, मधुर बोलिए और विनयपूर्वक बोलिए, फिर देखिए कि आपको इससे कैसी अद्‌भुत सफलता मिलती है।

(५) उदारता—उदारता की जंजीरें इतनी मजबूत हैं कि इनमें बँधा हुआ मनुष्य छूट नहीं सकता। जिसके साथ में आप कोई उपकार-अहसान कर देते हैं, वह जन्म भर के लिए आपका गुलाम बन जाता है। एक विद्वान् ने कहा है, "आदमी का दिल रुपये-पैसे से नहीं खरीदा जा सकता है।" जिन लोगों को आप अपना प्रेम पात्र बनाना चाहते हैं, उनके साथ में कुछ एहसान कीजिए, उदारता

प्रदर्शित कीजिए, जिसकी उसे आवश्यकता है, बिना माँगे दीजिए। बस इस कीमत में आप बड़े से बड़े व्यक्ति को खरीद सकते हैं। जो आज देकर उसका बदला आज माँगता है, उसे उतना ही एवज में मिल जाता है किंतु जो पीछे के लिए छोड़ देते हैं, वह दिन दूनी रात चौगुनी ब्याज के हिसाब से बढ़ता हुआ वापस आता है। अपने स्वभाव को उदार बना लीजिए, हर वक्त यह सोचते रहिए कि मैं इस समय किसे, क्या दे सकता हूँ ? जो कुछ दे सकते हैं, आज ही दीजिए।

अपने शत्रुओं को क्षमा कर दीजिए, अपने प्रेमियों को हर वक्त कुछ देने की सोचते रहिए। दीजिए, आपके पास पैसा, रोटी, विद्या, सदाचार, श्रद्धा, प्रेम, समय, शरीर जो कुछ भी हो, मुक्तहस्त से दुनिया को दीजिए, वह आपको बदले में कुछ देगी। दान वृत्ति को अपनाना, उदारता को स्वीकार करना—गरीब हो जाने का मार्ग नहीं है। समझदार किसान जानते हैं कि गेहूँ बो देने के बाद वह सैकड़ों गुना मिल जाता है। उदारता से ही दूसरों के दिल खरीदे जाते हैं।

यह पाँच गुण वशीकरण के आवश्यक साधन हैं। आप अपने अंदर इनको झरने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहिए, इनकी वृद्धि के साथ आपकी सफलता का मार्ग भी साफ होता जाएगा और फिर आपके लिए वशीकरण विद्या कुछ भी कठिन न रहेगी।

अप्सराओं का वशीकरण

कितने ही मनुष्यों का ख्याल है कि अदृश्यलोक में कुछ ऐसी मायावी स्त्रियाँ रहती हैं, जो अपने अंदर अद्‌भुत शक्तियाँ धारण किए हुए हैं। शांकिनी, डाकिनी, चुडैल, मसानी देवी, भैरवी आदि का विश्वास सभी देशों में किया जाता है और सब मजहबों में ऐसे अलौकिक स्त्री-पुरुषों की मान्यता है, जो आँखों से नहीं दिखाई पड़ते, पर अदृश्य हैं। सभी मजहबों में अनेक कथाएँ प्रचलित हैं,

जिनमें यह बताया गया है कि ऐसी अदृश्य सत्ताएँ कैसे कठिन कामों को बात की बात में हल कर देती हैं। भारतवर्ष में आमतौर से इन बातों पर विश्वास किया जाता है और ख्याल किया जाता है कि आसाम, बंगाल में इस विद्या का केंद्र रहा है और अब भी वहाँ बहुत-से जानकार मौजूद हैं।

देश के कोने-कोने में फैले हुए गुप्त और प्रकट तांत्रिक यह विश्वास करते हैं कि बावन भैरव और चौरासी योगिनी भी मौजूद हैं और वे विधि-विशेष से प्रकट की जा सकती हैं। तंत्रशास्त्र के अनेक ग्रंथों में ऐसी ही विधि-उपासनाएँ भरी पड़ी हैं। ग्रंथों में अनेक यक्षिणी बताई गई हैं, जिनके नाम महायक्षिणी, सुंदरी, मनोहरी, कनकवती, कामेश्वरी, रतिकरी, पद्मिनी, नटी, अनुरागिणी, विशाला, चंद्रिका, लक्ष्मी, शोभना, धान्या, जया, भूतिनी, श्मशानी, अदृश्य करणी, कर्ण पिशाचनी, अन्नपूर्णा आदि हैं। यह अपने नामों के अनुसार अत्यंत रूपवान्, मन को हरण करने वाली, काम-किलोल करने वाली, नट विद्या की अभ्यस्त, अनुराग प्रिय, विशाल, चंद्रिका की तरह उज्ज्वल, विजय करने वाली, डराने वाली, किसी वस्तु को अदृश्य कर देने वाली, कान में गुप्त बात कहने वाली, अन्न से भंडार भरे रखने वाली हैं। इनमें से हर एक यक्षिणी मनुष्य की अपेक्षा अनेक गुणी शक्ति रखती है और अदृश्य लोक से उन कामों को करके ले आती हैं, जिन्हें हम चाहते हैं। इनमें कोई या कुछ यक्षिणी ऐसी भी हैं, जो वशीकरण में मदद देती हैं। जिस स्त्री या पुरुष के ऊपर उस यक्षिणी को लगा दिया जाता है, वह वहाँ जाकर उसके मन को ऐसा फेर देती हैं कि उसे प्रयोगकर्ता के वश में होना पड़ता है, वह उसे जैसे चलाना चाहता है, वैसे चलता है, जो कुछ आज्ञा करता है, वह पूरी करती है।

जिन तांत्रिक देवियों के बारे में उपरोक्त पंक्तियों में उल्लेख किया गया है, उनके बारे में या उनसे मिलती हुई अन्य अप्सराओं के बारे में बहुत-से मनुष्य हमसे पूछताछ किया करते हैं। वे सोचते

हैं कि इनमें से कोई देवी यदि हमारे साथ लग जाए, तो हमारी मनोकामनाएँ पूर्ण हो सकती हैं और जो बात चाहते हैं, चुटकी बजाते ही हाजिर हो सकती हैं। लोग बहुत जगह उनकी सिद्धियाँ प्राप्त करने के बारे में ढूँढ़-खोज करते हैं और इसी सिलसिले में वे हमारे पास भी पत्र भेजते हैं कि कृपया अमुक यक्षिणी की साधना हमें बता दीजिए, अमुक देवी को अपनी कृपा से हमारे वश में करा दीजिए, जिससे अमुक इच्छाएँ पूर्ण हो जाएँ।

ऐसे लोगों के साथ हमारी पूरी हमदर्दी है। मनुष्य का धर्म है कि सर्वोत्तम सुख की तलाश करे, अपने मित्रों की इच्छा पूरी करने के लिए हमने इन अप्सराओं के बारे में अनुसंधान किया है। जैसा कहा जाता है, वैसा तो नहीं, पर कोई देवियाँ है जरूर। वे माल ढोने और एक के पास दूसरे की बातें ले जाने की सेवा तो नहीं करतीं, पर जिस पर प्रसन्न होती हैं, उसे स्वर्ग का सुख अनुभव करा देती हैं। रतिप्रिया, सुंदरी, मनोहरी, पद्मिनी, अनुरागिनी, चंद्रिका आदि से मिलती-जुलती अप्सराएँ तो हमारे कई मित्रों ने देखी हैं और कई के पास हैं भी। वे उनकी साधना विधि बहुत जाँच-पड़ताल के बाद और थोड़े-से आदमियों को बताते हैं, परंतु एक पाश्चात्य तांत्रिक ऐसे हो चुके हैं, जिन्होंने अप्सराओं का रसास्वादन किया था और उन्हें उनका स्थान, घर, रहन-सहन, साधन की विधि सब कुछ थोड़े-से किंतु बिना लाग-लपेट के शब्दों में सबके सामने खोलकर रख दिया है। ऐसा साहस बहुत कम लोग करते हैं। पाठक उत्सुक होंगे कि उस विवरण को हमें शीघ्र बतलाया जाए। अच्छा लीजिए आपको बताए देते हैं।

जिन तांत्रिक की ओर हमारा इशारा है, ये एक बड़े भारी भक्त हुए हैं, उनका नाम है—'माईकल ऐंजेलो।' वे खुलेआम कहते थे, "मुझे पत्थरों-चट्टानों में भी दिव्य मूर्तियाँ दिखाई पड़ती हैं। एक ऐसे सिद्धपुरुष की आवश्यकता है, जो इनमें प्राण डाल सके।" संसार के परमाणुओं में सौंदर्य और आनंद की जीती-जागती

अप्सराएँ छिपी बैठी हैं किंतु निर्जीव होने के कारण वे हमारी सहायता नहीं कर सकतीं। इन प्रतिमाओं का प्राण है—'प्रेम' यदि हमारे हृदय में निःस्वार्थ प्रेम का अमृत भरा हुआ हो, तो उसकी बूँद पाकर ही यह निर्जीव प्रतिमाएँ सुजीव हो सकती हैं और अलौकिक सौंदर्य के कारण हमें अपार आनंद का अनुभव करा सकती हैं। जब हम अपने पवित्र प्रेम का अमृत संसार के ऊपर छिड़कते हैं, तो उसके कण-कण में से श्याम सलौनी अप्सराएँ जाग्रत् होकर सामने आ जाती हैं और यही दुनिया, यही हमारी झोंपड़ी इंद्र का परिस्तान बन जाती है।

प्रभु हमारे चारों ओर व्याप्त है। उसकी चैतन्य सत्ता सब तरफ लहरा रही है। संसार में जो कुछ है, सब उसी सत्ता के अंतर्गत है और उसी मिट्टी से बना हुआ है। ईश्वर की प्रतिज्ञा है कि **'योयथा मा प्रपद्यन्ते तां तथैव भजाम्यहम्'** जो मुझे जिस भाव से देखता है, उसके लिए उसी भाव से प्रकट होता हूँ। रामचरितमानस साक्षी है **"जाकी रही भावना जैसी। प्रभु मूरति देखी तिन तैसी।"** हम जिस भाव से प्रभु को देखते हैं, वे उसी रूप से प्रकट हो जाते हैं। अप्सराएँ क्या प्रभु के रूप से बाहर है ? मनोविज्ञान के आचार्य कहते हैं, "भावना एक प्रत्यक्ष पदार्थ है, उसे ईश्वरतत्व में हम जितने बल के साथ फेंकते हैं, वह उतने ही जोर से सामने की वस्तु से टकराकर प्रेरक के पास उसी प्रकार लौट आती है, जैसे कि रबड़ की गेंद जोर से फेंकने पर सामने की दीवार से टकराकर वापस लौट आती है।" एक दूसरा पंडित कहता है कि प्रेम और पवित्रता के विचारों से जितना लाभ दूसरों को होता है, उससे अनेक गुना अपने को होता है। इन उत्तम भावनाओं का सबसे अधिक आनंद उसे प्राप्त होता है, जिसके हृदय में कि वे निरंतर निवास करती हैं।'

आप यदि इन अप्सराओं के साथ आनंद करना चाहते हैं, तो दूसरों से जितना बन सके, ऊँचा प्रेम कीजिए। कलुष-कषायों को

बिलकुल हटा दीजिए और इस संसार को प्रभु की रम्य-वाटिका समझते हुए अपने को उसका माली मानिए, एक-एक पौधे को अपने आँसुओं से सींचिए, किसी को मुरझाया देखें, तो अपना पसीना बहाकर उसमें जल डालिए। इस वाटिका के अपरिमेय सौंदर्य को देख-देखकर अपने नयनों को तृप्त कीजिए। फिर देखिए, इस वाटिका में आपका राजा-महाराजाओं जैसा स्वागत होता है या नहीं। लताएँ आपके गले से लिपटेंगी, वृक्ष आपका पंखा झलेंगे, फूल आपके लिए सुगंध भेंट करेंगे, कलियाँ मंद हँसी से मुस्कराती हुई स्वागत करेंगी। जिस संसार को आप इस समय रूखा, नीरस, कुरूप समझ रहे हैं, वह एक क्षण बाद मधुर, सरस, सुंदर और पवित्र बन जाएगा। जरा प्रेम को अपने हृदय में प्रवेश तो करने दीजिए, आप बदल जाएँगे और आपका संसार बदल जाएगा। जो पत्थर और चट्टान इस समय कठोर, जड़ और निर्जीव मालूम पड़ रहे हैं, वास्तव में वे वैसे नहीं हैं। भक्त माईकेल ऐंजलो की आँखों से देखिए, इनमें एक-एक अप्सरा छिपी बैठी है, वह सौंदर्य की मूर्ति है और आनंद की सरिता है। परंतु बेचारी करे क्या ? निर्जीव हैं, उन्हें कोई ऐसा सिद्ध पुरुष नहीं मिलता, जो प्राण डालकर जीवित कर दे और अपनी अंकशायनी बनावे। लोग जिस वस्तु के लिए व्याकुल फिर रहे हैं, वह स्वयं प्रतीक्षा में खड़ी हुई है, परंतु दुर्भाग्य की बात है कि हम उसे देख नहीं पाते। काश, हमने प्रेम का महत्त्व समझा होता और इस संजीवन रस के प्रयोग करने की विधि जानते तो कितना सुंदर होता ! यह संसार हमारे लिए कितना उदार, दयालु और उपकारी बन जाता है, दुःख, शोक के स्थान पर हम चारों ओर आनंद ही आनंद उमड़ता देखते हैं।

अध्यात्म विज्ञान बतलाता है कि पिंड, ब्रह्मांड का नक्शा है। जो संसार में है, वह सभी पिंड में मौजूद है। यथार्थ में छोटे परमाणु के अंदर वह समस्त शक्तियाँ बीज रूप में छिपी हुई हैं, जो संसार में कहीं भी दृष्टिगोचर होती हैं। आनंद की अनुभूति जिन वस्तुओं

द्वारा होती है, उनके बीज हर एक चैतन्य परमाणु में पाए जाते हैं। भक्त माइकेल झूठ नहीं बोलते, वे सच कहते हैं कि यदि किसी जड़ वस्तु पर भी सच्चा प्रेम किया जाए, तो उसके अंतर्गत छिपे हुए परमाणु उत्तेजित होकर प्रेमी की भावना स्वरूप बन जाते हैं, उनमें वह शक्ति आ जाती है, जिसके द्वारा आनंद का स्रोत फूट पड़ता है, इच्छाओं की पूर्ति के योग्य समुचित मसाला उनके अंदर से जाग्रत् हो उठता है। जड़ प्रकृति में स्थूल दृष्टि से देखने पर जड़ता के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। निर्दयता, निष्ठुरता, बदी, बेईमानी, यह बातें जड़ता में ही पाई जाती हैं। पत्थर की आप पूजा कीजिए, उसे रेशमी वस्त्र पहनाइए, उसे उठाकर गंगातट पर रख दीजिए या और भी अनेक प्रकार के अहसान कीजिए, पर वह उनका कुछ भी उत्तर या बदला न देगा। आपकी खुशी या रंजीदगी की वह जरा भी परवाह न करेगा, क्योंकि वह जड़ है। प्रकृति भी इसी प्रकार जड़ है। हम असंख्य मनुष्यों को ऐसी शिकायत करते सुनते हैं कि हमने उनके साथ इतने अहसान किए, पर उसने बदी में ही उत्तर दिया। 'नेकी का बदला बदी' यह संसार का स्वाभाविक धर्म जो बदलना चाहता है, वह मिथ्या, माया, पापमय, नरक, भवसागर आदि नामों से पुकारते हैं, उनका मतलब प्रकृति के स्थूल तत्त्वों से है, जड़ संसार सचमुच ही मिथ्या और भवसागर है। यह एक चट्टान की तरह निर्जीव है।

अब प्रश्न उठता है कि फिर इनमें आनंद क्यों प्रतीत होता है ? आनंद, जड़ प्रकृति का धर्म नहीं, वरन् चैतन्य आत्मा का धर्म है। हमारा हृदय जिन वस्तुओं में प्रेम का आरोप करता है, वही आनंदमय बन जाती है। यथार्थ में वह वस्तु स्वयं कुछ नहीं, अपने मन का प्रेम ही उसमें आनंद भर देता है। बालक खिलौने से बहुत प्रेम करता है, बड़े होने पर उनसे नफरत करता है। खिलौने न तो प्रिय हैं, न अप्रिय, वे सदा एकरस हैं, पर मनोभावों का आरोप करते ही उनकी अनुभूति दूसरी तरह की हो जाती है। आपका घोड़ा

आपको बहुत प्रिय है, पर यदि वह बेच दिया, तो उस पर से सारी ममता उठ गई। बच्चे को माता, तरुण को स्त्री, वृद्ध को संतान प्रिय लगती है। जवान आदमी अपनी माता से उतना प्यार नहीं करता जितना बचपन में करता था। कारण यही है कि माता के ऊपर जो सर्वोत्तम प्यार का उसने आरोप किया था, वह अब उठकर स्त्री पर चला गया। छोटा बच्चा अपनी माता से किसी को झगड़ा करते देखे, तो उसे मारने दौड़ता है, पर मर जाने पर माता के उसी शरीर को खुशी-खुशी जला देता है। तात्पर्य यह है कि इस समस्त संसार में कुछ भी वस्तु प्रिय या अप्रिय नहीं है, कोई भी चीज प्रसन्नता या अप्रसन्नता नहीं दे सकती। कूड़े-कचरे को देखकर साधारणतः घृणा होती है, पर कागज बनाने वाले उस कूड़े-कचरे को ही लक्ष्मी के रूप में देखते हैं। भक्त माइकेल के शब्दों में यही तत्त्वज्ञान भरा हुआ है। वे कहते हैं, "मुझे चट्टानों में भी अप्सरा दिखाई पड़ती हैं, पर ऐसे सिद्ध की आवश्यकता है जो उनमें प्राण डाल सके। यदि इनमें प्राण नहीं, तो यह चट्टान के चट्टान ही पड़े रहेंगे, किंतु प्राण-प्रतिष्ठा होते ही रत्नजड़ित रेशम मखमली पोशाक पहनकर उर्वशी को मात करने वाली यही अनुपम परियाँ आँखों के आगे ऐसा सुंदर नृत्य करेंगी कि मन मुग्ध हो जाएगा और यही जड़ संसार करोड़ों नंदन वनों से अधिक आनंददायक प्रतीक होगा।"

यह प्राण-प्रतिष्ठा कैसे होगी ? प्रेम ही प्राण है। आप स्वार्थ और वासना के विषय को अंतस्थल में से हटा दीजिए, तो इनके भार से दबा हुआ पवित्र प्रेम अपने आप खिल उठेगा। इस पवित्र प्रेम को जिस मंदिर, पशु-पक्षी, स्त्री-पुरुष पर आरोपित करेंगे, उसी के अंदर की परियाँ छूम-छनछन करती हुई बाहर निकल पड़ेंगी। यह परियाँ स्वप्न नहीं सत्य है, आत्मा सत्य है, आनंद सत्य है, इसलिए उनकी अनुभूति रूपिणी यह परियाँ भी सत्य हैं। यह आपका मनोरंजन ही नहीं करतीं, वरन् संपूर्ण इच्छाएँ तृप्त कर देती

हैं। जो वस्तु माँगते हैं, वही लाकर देती हैं। इसे भी झूठ मत समझिए, क्योंकि जिनने स्वार्थ और विषयों का तिलांजलि देकर इन दिव्य देवियों को जगाया है, वह उनसे लड्डू मँगवाने का काम नहीं लेगा। बालक सोचता है कि बड़ा हो जाऊँगा तो बहुत से कुम्हार, नौकर रखूँगा, जो रोज हजारों तरह के खिलौने बनाकर मुझे प्रसन्न किया करेंगे। पर बड़े हो जाने पर कोई उसके उन बचपन के विचार की याद दिलावे कि अब तो आप बड़े हो गए हैं, खिलौना बनाने के लिए कुम्हार नौकर रखिए तो केवल मुस्करा भर देता है, क्योंकि अब उसे खिलौने से भी बढ़कर दूसरी प्रसन्नता की चीजें प्राप्त हैं। अब वह अपनी बचपन की बुद्धि की अपूर्णता और खिलौनों की निरर्थकता समझ गया है, इसलिए उनकी तनिक भी इच्छा नहीं करता।

आप अप्सराओं को वश में करके उनसे तरह-तरह की चीजें लेने की आज इच्छा करते हैं, पर जब वे आपके वश में आ जावेंगी तो देखेंगे कि अब इनका प्राप्त होना ही सबसे बड़ा आनंद है। वह वस्तुएँ, तो अपने आप ही इनके साथ मौजूद हैं, जिन्हें हम बौद्धिक बचपन में खिलौने की तरह चाहते थे। आप निःस्वार्थ भाव से प्रेम करना सीखिए। अपने विराने सभी से पवित्र प्रेम रखिए। सबके लिए शुभकामनाएँ कीजिए। कुएँ की आवाज की तरह आपकी भावनाएँ आपके पास लौट आवेंगी और आत्मा को आनंद से परिपूर्ण कर देंगी। यह अप्सराएँ आपके ही मानस चित्र, आपकी ही छाया मूर्तियाँ हैं। इन्हें उत्पन्न कीजिए और अपने को आनंदित करिए।

यक्षिणी वश में करने के इच्छुकों ! यह संसार मरघट है, इसमें अनेक भैरव-भैरवी सोए हुए पड़े हैं। जब सब ओर सुनसान हो जाए, तुम्हारे मद, मत्सर दूर हो जाएँ, रात्रि की एकांत एकाग्रता तुम्हारे मानसलोक में आ जाए, तब चुपचाप बैठना और निर्भय होकर मरघट पहुँचना और किसी मृतक की लाश पर बैठकर मंत्र का पुरश्चरण करना। मरे हुए प्राणी के शरीर पर नहीं, वासनाओं से

रहित अपने मन की छाती पर बैठना। प्रेम का मन्त्र जपना। हे प्रेम ! आपकी जय हो। आप भूतेश्वर शंकर के स्वरूप हैं, आप मेरी मनोकामनाओं को पूर्ण कर दीजिए। परीक्षा के लिए बड़े-बड़े भूत आवेंगे। कोई डरावेगा, कोई लालच देगा, पर किसी की ओर आँख उठाकर भी मत देखना। अनन्य भाव से यही मंत्र जपते रहना। हे प्रेम ! आपकी जय हो, परीक्षा में उत्तीर्ण हुए तो भगवान् भूतनाथ आपको वह यक्षिणी उपहार में देंगे, जिसे आप चाहते हैं। वह बात ही बात में हर किसी को वश में कर दिया करेगी। फिर तीनों लोकों में कोई भी ऐसा न बचेगा, जो आपको वशीकरण से बाहर हो। सर्वत्र आपकी विजय दुंदुभी बजा देगी। ऐसी हो वह प्रेमी की दिव्य भावना-वशीकरण की महायक्षिणी।

यदि आप चाहे तो आप भी उसे सिद्ध कर सकते हैं और उसके ऐश्वर्य का आनंद भोग सकते हैं।

ईश्वर को वश में करना

मनुष्यों का ही नहीं, ईश्वर का भी वशीकरण संभव है। इस संसार की कोई भी वस्तु ऐसी नहीं, जो तीव्र इच्छा शक्ति होने पर भी प्राप्त न हो सके। जिन्हें सच्ची आकांक्षा हो। वे परमात्मा की समीपता प्राप्त कर सकते हैं, उसे अपना सहचर बना सकते हैं। प्रेम के भक्ति के बंधन ऐसे अटूट हैं कि उनमें मनुष्यों की भाँति परमात्मा को भी बाँधा जा सकता है।

आप परमेश्वर के प्रिय पात्र बनना चाहते हैं। क्या आप किसी ऐसे मनुष्य को कृपा पात्र बना सकते हैं, जो आपके प्रियजनों से उदास रहा हो या द्वेष करता हो ? जब आपके प्रियजन विपत्ति में पड़े हुए हों और आप से उनकी ओर मुँह बिचकाकर उदासीनतापूर्वक आगे बढ़ जाऊँ, तो क्या यह कार्य आपकी कृपा प्राप्त करने योग्य होगा ? कोई माता-पिता उस व्यक्ति से प्रसन्न न होंगे, जो उसकी संतान से द्वेष करता हो या उपेक्षा की दृष्टि से

देखता हो। प्रभु के प्रिय पुत्र के साथ उदासीनता और दुष्टता का व्यवहार करने वाला कोई जीव यदि यह आशा करता है कि उसे ईश्वर अपना कृपा पात्र बना लेंगे, तो वह एक बड़े भारी भ्रम में भटक रहा है। यदि किसी व्यक्ति का प्रेम प्राप्त करना है, तो उसकी खुशामद की अपेक्षा उसके आदेशों का पालन करना, उसके प्रियजनों को सुख पहुँचाना, उसकी संपत्ति को सुरक्षित रखना अधिक महत्त्वपूर्ण है। ऐसा भक्त जो मुँह से तो राम-राम रटता है, पर कठोर पत्थर जैसा कलेजा लिए बैठा है। किसी के दुःख पर जरा भी नहीं पसीजता, व्यर्थ की विडंबना कर रहा है। शायद ही उसकी तोता रटंत का कुछ परिणाम प्राप्त हो। ईश्वर कर्मकांड को नहीं, हृदय की पवित्रता और प्रेम को देखता है। जो संसार के साधारण प्राणियों की सेवा-सहायता करके उनको उन्नत बनाने, सन्मार्ग पर लाने, छाती से चिपटाने के लिए प्रेरित न करे, वह क्या प्रेम ?

प्रेम सुगंधित पुष्प के समान है, वह अपने वैभव का परिचय सबसे प्रथम अपने पड़ोसियों को देता है। जिसके हृदय में परमात्मा के प्रति भक्ति है, वह आत्माओं के लिए भी प्रकट होगा। पर्वत की कठोरता में से निकलकर जब कोई नदी महासागर में मिलने के लिए प्रयाण करती है, तो वह रास्ते में अनेक प्राणियों को तृप्त करती जाती है, क्योंकि प्रेम का यह धर्म है कि यह जहाँ कहीं रहे सुगंधित पुष्प की तरह अपनी दिव्यता से निकटवर्ती लोगों को तृप्त करे। जिस नदी को देखकर प्यासे पशु-पक्षी निराश लौट रहे हों। आप दूर बैठकर भी यह अनुमान लगा सकते हैं कि यह दीखने मात्र की नदी है, जल इसका सूख गया है और जब तक इसमें जल न भर जाए, सागर में आत्मसात् होने के लिए नहीं पहुँच सकती। परमात्मा की सच्ची उपासना और कुछ नहीं, केवल उससे अनंत प्रेम करना है। बनावट या पाखंडों से नहीं, वरन् सच्चे प्रेम से ही प्रभु को प्राप्त किया जा सकता है। ऐसी अनन्य भक्ति या पवित्र

प्रेम, जिसके अंतःकरण में होगा, वह अपने निकटवर्ती लोगों को उस अजस्र धारा से स्नान अवश्य करा देगा।

ईश्वर-भक्ति की यह कसौटी है कि वह ईश्वर की संतान का भी भक्त होगा। प्रेम और स्वार्थ यह दोनों ही विरोधी तत्त्व हैं, दोनों का एक साथ रहना नहीं हो सकता। जो अपनी तृष्णा को तृप्त करने के लिए दूसरों को सताता है, वह कैसा धार्मिक ? कैसा भक्त ? कैसा प्रेमी ? संकीर्ण प्रेम के लिए दुःख भोगना पड़ेगा, पर जो अपने लिए कुछ नहीं चाहता, उसके लिए वेदना का कोई कारण नहीं। परिपूर्ण ईश्वरीय प्रेम की कक्षा तक पहुँचने के लिए मानवीय प्रेम की परीक्षा पास करनी पड़ती है। जो दृश्य मनुष्यों से प्रेम नहीं कर सकता, वह अदृश्य की भी भक्ति न कर सकेगा।

प्रेमी दूसरों के दुःख को देखकर निष्ठुर नहीं बैठा रहता, वरन् पसीज जाता है। जबकि वह सत्पुरुषों, सुखी और समृद्ध पुरुषों को देखकर प्रसन्न होता है, तो दुःखी लोगों के दुःख का भी प्रभाव होना चाहिए। बालक को जब कुछ कष्ट होता है, तो माता की आँखें छलक आती हैं, चूँकि बालक से उसका निकट संबंध स्थापित है इसलिए बालक की सुख-दुःख की अनुभूतियाँ भी विद्युत् शक्ति की भाँति माता के पास पहुँचती है और उसके हृदय में दया उमड़ आती है। यहाँ दुःख और दया के अंतर को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। दुःख अपने कष्ट की अनुभूति है और दया दूसरों की सहायता करने की भावना। स्वार्थ और परमार्थ में जितना अंतर है, उतना ही अंतर दुःख और दया में है। प्रेम की दो अनुभूतियाँ हैं—दया और आनंद। दुःखी को देखकर प्रेमी के अंतःकरण में दया उमड़ती है और सुखी को देखकर आनंद उत्पन्न होता है। इसके विपरीत क्रोध और घृणा स्वार्थ के चिह्न हैं। स्वार्थी मनुष्य दुःख के समय में समर्थ होने पर क्रोध करता है और असमर्थ होने पर रोता-चिल्लाता है एवं सुख मिलने पर घमंड में मदहोश हो जाता है।

पवित्र हृदय व्यक्ति के हृदय में पीड़ित व्यक्तियों के प्रति दया उत्पन्न होती है। आत्मा कायर या हतवीर्य नहीं है, इसलिए वह अपनी चैतन्यता दया में मिश्रित कर देती है। जिस कटोरे में खाँड़ रखी हुई है, उसमें यदि दूध डाला जाए, तो उन दोनों के सम्मिश्रण से मीठा दूध तैयार हो जाएगा। चैतन्यता और करुणा का मिश्रण होते ही एक बड़ी प्रिय क्रियाशीलता उत्पन्न हो जाती है, जिसे हम सेवा के नाम से पुकारते हैं। निःस्वार्थ प्रेमी, ईश्वर भक्त के हृदय में निरंतर दया उमड़ती रहती है, इसलिए वह सदैव सेवा धर्म में प्रवृत्त रहता है, उसकी संपूर्ण क्रियाएँ लोक-कल्याण के लिए होती हैं। कोई उसके परमार्थ पर भले ही हँसे, पर अपने इस कार्य पर वह स्वयं अनुमान करता है कि सेवा से बढ़कर आनंदप्रद वस्तु और कोई इस दुनिया में नहीं है। संसार का उच्चतम आनंद उस सेवा भावी को सदैव प्राप्त रहता है। ऐसा आनंद जिसकी एक बूँद भी उन कुच-कांचन की नालियों में सड़ने वाले कीड़ों को प्राप्त हो जाए, तो वे अपने सौभाग्य की तुच्छता को भली प्रकार समझ जावें।

एक भक्त का अनुभव है कि जो आँखें दया के आँसू झड़ने से पवित्र हो गई हैं, उन्हें ही ईश्वर की दिव्य मूर्ति दिखाई देती है। एक योगी का मत है कि निःस्वार्थ प्रेम ही वह ढाल है, जिसके पीछे रहकर पाप और प्रलोभनों से बचा जा सकता है। ऐसा दिव्य तत्त्व किस प्रकार प्राप्त किया जाए ? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि अपने हृदय को स्वार्थ की कीचड़ से खाली करो, परमात्मा उसमें प्रेम का अमृत भर देगा। कुत्सित इच्छाओं के विदा होते ही उसकी आभा दिखाई देने लगती है। कहते हैं कि ईसा मसीह को शूली-पर चढ़ाकर मार डाला गया, किंतु जब उनकी लाश को नीचे उतारा गया, तो वे पुनर्जीवित हो गए। आपने पवित्र प्रेम को अपने स्वार्थों की शूली पर चढ़ाकर मार डाला है। चलिए पश्चात्ताप कीजिए और मृतक को शूली पर से नीचे उतार लीजिए,

वह ईश्वर का सगा बेटा अपने आप जीवित हो जाएगा और आपके पापों की गठरी अपने सिर पर लादकर आपको पार कर देगा।

ईश्वरीय प्रेम क्या है ? मानवीय प्रेम का ही एक बृहत्तर रूप है। **"सर्वदेव नमस्कारं केशवं प्रति गच्छति।"** सब देवताओं के लिए किया हुआ नमस्कार केशव को प्राप्त होता है। संपूर्ण प्राणियों से किया हुआ प्रेम ईश्वर को प्राप्त होगा। आप निष्कपट भाव से ईश्वर की भक्ति कीजिए, उसकी चलती-फिरती प्रतिमाओं के चरणों पर अपना मस्तक टेक दीजिए। ईश्वर आपको ठुकरावेंगे नहीं, वे आपको उठाकर छाती से लगा लेंगे। जब आप अपने को ईश्वर को सौंप रहे हैं, तो ईश्वर आपसे पीछे न रहेगा, वह भी अपने को आपके सुपुर्द कर देगा। इस प्रकार आप मनुष्यों को नहीं, ईश्वर को भी प्रेम के वशीकरण मंत्र द्वारा अपने वश में कर सकेंगे।

वशीकरण के तांत्रिक प्रयोग

तंत्रशास्त्र की गुप्त प्रक्रियाएँ जो हठात् किसी मनुष्य को अर्द्धनिद्रित करके वशीभूत कर लेती हैं, बहुत कठिन हैं, उनका अभ्यास खतरे से खाली नहीं। हर कोई न तो उन्हें पार कर सकता है और न सबके लिए उनकी आवश्यकता है। वह पात्र और अधिकारी का विषय है। कुपात्र उसे प्राप्त भी कर लें, तो दुरुपयोग करेंगे और प्रभु की पवित्र सृष्टि में विष-बीज बोते फिरेंगे। इसी प्रकार अनधिकारी इस ओर बढ़ेंगे, तो उन खतरों में पड़ जाएँगे, जो अक्सर तांत्रिक अभ्यासों में अनाड़ी साधकों को उठानी पड़ती हैं। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए एक सर्वसुलभ साधना का यहाँ उल्लेख कर रहे हैं।

मानसिक साधन

मस्तिष्क में प्रेम शक्ति का स्थान कनपटी के ऊपरी भाग में है। अपने इस स्थान को जाग्रत् करने के लिए निम्न प्रकार अभ्यास कीजिए। रात को आठ और दस बजे के बीच किसी एकांत कमरे

में जाइए। दरवाजे और खिडकियाँ बंद कर लीजिए, जिसमें बाहर की खटपट सुनाई न पड़े और दृश्य दिखाई न पड़े। प्रकाश बहुत ही मंद हो। एक पतली बत्ती का दीपक टिमिमाना या छोटी मोमबत्ती जला लेना पर्याप्त है। मेज-कुर्सी का प्रबंध हो सके तो उत्तम है, न हो तो आसन पर एक फुट ऊँची लकड़ी की संदूक को सामने रखकर उत्तराभिमुख बैठ जाइए। यह कहने की तो आवश्यकता नहीं है कि मल-मूत्र से निवृत्त होकर एवं हाथ-पाँव, मुख आदि धोकर अभ्यास पर बैठना चाहिए। आरंभ में पालथी मारकर मेरुदंड को सीधा रखते हुए आँखें बंद करके बैठ जाइए। दस मिनट तक मन ही मन ॐ, राम या जो मंत्र प्रिय हो उसे जपते रहिए और मन को एकाग्र करने का प्रयत्न कीजिए। दस मिनट बाद जप बंद कर दीजिए और हाथों की दोनों कुहनियाँ मेज या संदूकची पर जमाइए तथा जबड़े के निचले भाग को हथेलियों पर रख लीजिए, उँगली को ऊपर कनपटी की ओर उठा दीजिए। इस प्रकार आपके दोनों हाथ दोनों गालों को ढक लेंगे। हथेलियाँ जबड़े से सटी हुई होंगी और उँगलियाँ कनपटी के पास पहुँच जावेंगी। अब उँगली के पोरुओं को कुछ नीचे की ओर झुकाइए और कान के ऊपरी भाग की सीध कनपटी से तर्जनी, मध्यमा और अनामिका की उँगलियों के पोरुओं के अंतिम सिरे से सटा दीजिए। हथेलियों पर सिर का अधिक जोर न देना चाहिए, थोड़ा-सा सहारा पर्याप्त है। विज्ञान बताता है कि उँगली के पोरुओं में बहुत अधिक मात्रा में मानवीय विद्युत् रहती है। उँगलियों के छोरों का स्पर्श होने पर मस्तिष्क के प्रेम शक्ति संस्थान में उत्तेजना और हलचल पैदा होती है।

उपरोक्त प्रकार से बैठकर नेत्र बंद कर लेने चाहिए और मानस जगत् में पीले रंग का ध्यान करना चाहिए। निखिल विश्व में सुनहरे पीले रंग का ही प्रकाश भरा हुआ है, यह ध्यान दृढ़ता से करना चाहिए। केवल पीले रंग का अनंत आकाश ही चारों ओर फैला हुआ देखने से मस्तिष्क के प्रेम केंद्र में एक प्रकार का

चुंबकत्व उत्पन्न होता है। जब जो मनुष्य प्रेमपूर्ण विचार कर रहा हो, तो उसके मस्तिष्क से पीले रंग की किरणें फूटती हुई यंत्रों द्वारा देखी गई हैं। इसी प्रकार यह भी अनुभव किया जा चुका है कि जब मन में केवल पीले ही रंग का ध्यान हो, तब प्रेम केंद्र उत्तेजित हो जाता है। कई बार परीक्षा के लिए पीले रंग का ध्यान करते हुए व्यक्तियों के शरीर पर जहरीले डंकों वाली मक्खियाँ और बिच्छू छोड़े गए, किंतु उन्होंने रत्ती भर भी कष्ट न दिया। एक आयरिश डॉक्टर शहद की मक्खियों का छत्ता नंगे शरीर होकर तोड़ लेता था, मक्खियाँ उसके चारों ओर भिनभिनाती रहतीं, पर उसे जरा भी नुकसान न पहुँचाती थीं। जिस व्यक्ति का वशीकरण करना हो उसको पीले रंग से रंगा हुआ ध्यान करने पर वह अपनी ओर आकर्षित होता है।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा